अरफ़ात किरण

इस्लाम रहनुमाई कर सकता है

"तंग नज़री और लसानी व नस्ली इख़्तिलाफ़ात को दूर करने और फ़र्राख़ दिली व बेतअस्सुबी और इन्सानी वहदत का ख़्याल व जज़्बा पैदा करने में इस्लाम बेशक़ीमत मदद और सही रहनुमाई कर सकता है। मुल्क से मुहब्बत के सही जज़्बे के तहत यह देखे बग़ैर कि यह उसूल व नज़रिया और यह बात कहां से आई है और इसका कहने वाला कौन है? सही और मुफ़ीद बात को अपनाइये, अगर किसी मकान में आग लग जाए तो उसे बुझाते वक़्त यह नहीं देखा जाता कि बाल्टी किसकी है और पानी कहां का है? किसी मकान या बस्ती की तबाही से कहीं ज़्यादा मुल्क व क़ौम की तबाही है, मुल्क को ख़तरात से बचाने, उसे सालिमियत और इस्तहकाम बख़्शने के लिए यह न देखिए कि मुल्क के लिए मुफ़ीद नज़रियात कुरआन और हदीस से माख़ूज़ हैं, इस्लाम बिला शुब्हा मुल्क को दरपेश इस ख़तरे को दूर करने के लिए बेहतरीन रहनुमाई कर सकता है।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)
(एक बेहतरीन हिन्दुस्तानी समाज की तश्कील में इस्लाम क्या हिस्सा ले सकता है: 27-28)

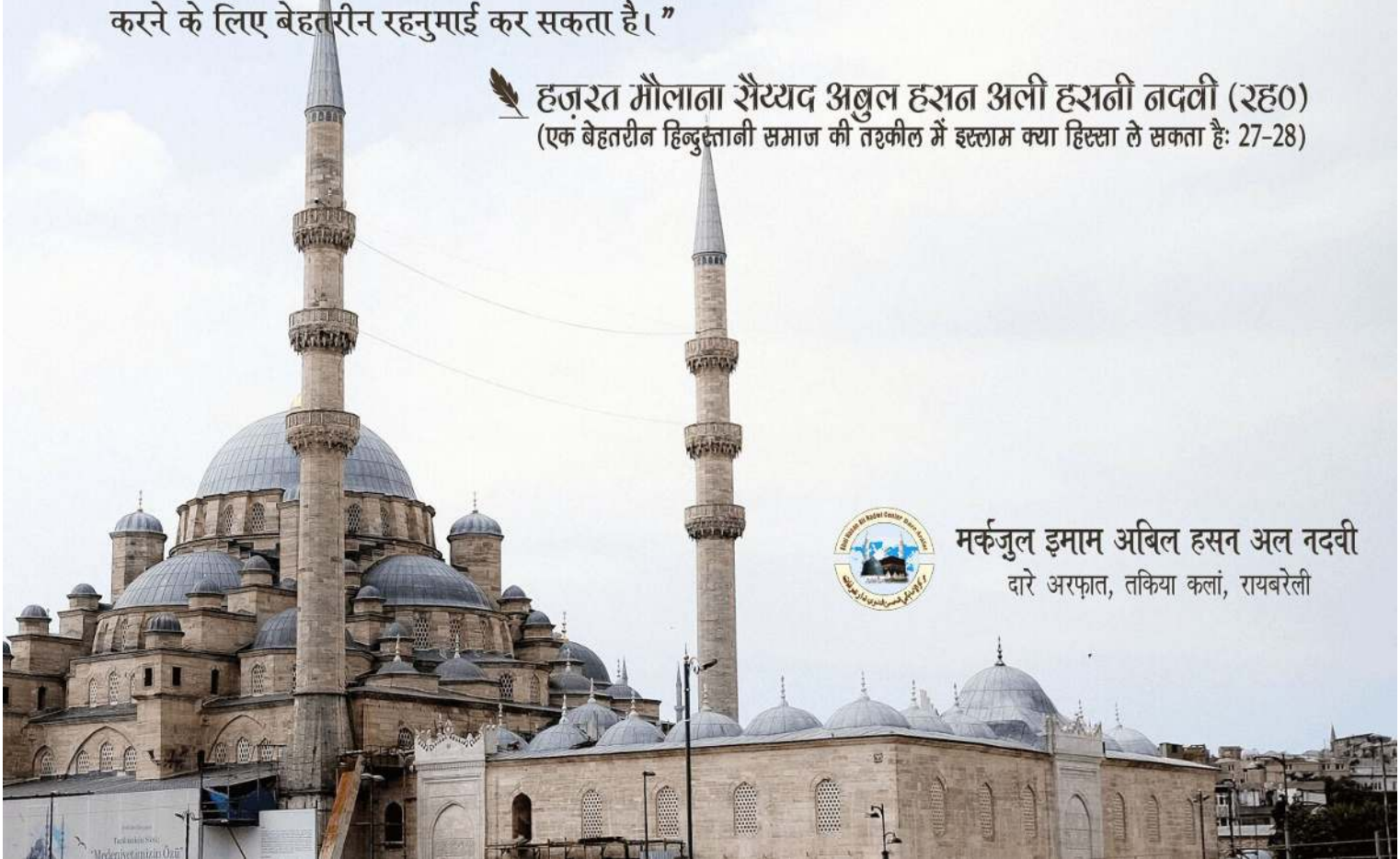

मर्कजुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

ईमान तथा दृढ़ता के जौहर

"हां जबकि इस ज़मीन की सबसे बड़ी घमण्डी ताक़त भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती, तो एक ताक़त है जो हमें एक पल में तबाह–बर्बाद कर सकती है। वह कौन है?

वह स्वयं हम हैं और हमारी ख़ौफ़नाक ग़फ़लत है। यदि हम समय पर जाग गए तो हम पर हमारे सिवा कोई हावी नहीं हो सकता। हम ईमान तथा दृढ़ता से लैस होकर इतने ताक़तवर हैं कि दुनिया का सबसे बड़ा घमण्ड भी हमें हरा नहीं सकता लेकिन यदि हमारे अन्दर आस्था तथा कर्म से संबंधित एक छोटी सी कमज़ोरी भी पैदा होती है तो हम स्वयं ही अपने हत्यारे होंगे और हमसे बढ़कर दुनिया में अचानक मिट जाने वाली कोई चीज़ नहीं मिलेगी।

हमको सरकार नहीं हरा सकती, पर हमारी ग़फ़लत हमें पीस डालेगी। हमको सेनाएं नहीं रौंद सकतीं लेकिन हमारे दिल की कमज़ोरी हमें रौंद डालेगी। हमारे दुश्मन शरीर नहीं हैं, अक़ाएद व आमाल (आस्था तथा कर्म) हैं।

यदि हमारे अन्दर डर पैदा हो गया, शक–शुब्हे (भ्रम) ने जगह पा ली, ईमान की मज़बूती और हक़ का यक़ीन डगमगा गया, हम क़ुर्बानी से बचने लगे, हमने अपनी रूह मोह–माया के हवाले कर दी, हमारे सब्र और बर्दाश्त में कमी आ गई, हम इन्तिज़ार से थक गए, मांगने से उकता गये, हम व्यवस्थित न रहे, अपने आन्दोलन के समस्त साथियों को एक राह पर न चला सके, हम बड़ी से बड़ी कठिनाइयों और मुसीबतों में भी शांति व्यवस्था को स्थापित न रख सके, हमारी आपसी एकता के रिश्ते में कोई गांठ पड़ गई, कहने का अर्थ यह कि यदि दिल के यक़ीन और क़दम के अमल में हम पक्के और पूरे न निकले तो फिर हमारी हार, हमारी नामर्दी, हमारी तबाही, हमारे पिस जाने, हमारे समाप्त हो जाने के लिए न तो सरकार की ताक़त की ज़रूरत है, न उसके जबर व हिंसा की। हम स्वयं अपना गला काट लेंगे और फिर हमारी नामुरादी की कहानी दुनिया की सीख के लिए बाक़ी रह जाएगी।

हमारी हस्ती सिर्फ़ दिल और रूह की सच्चाइयों तथा पवित्रता पर स्थापित है और वह हमें दुनिया के बाज़ारों में नहीं मिल सकती। अगर ख़ज़ाना ख़त्म हो जाए तो बटोर लिया जा सकता है। अगर फ़ौजें कट जाएं तो दोबारा बनाईं जा सकती हैं। अगर हथियार छिन जाएं तो कारख़ानों में ढ़ाल लिए जा सकते हैं।

लेकिन अगर हमारे दिल का ईमान जाता रहा तो वह कहां मिलेगा? यदि सत्यता व त्याग का पवित्र भाव मिट गया तो वह किससे मांगा जाएगा? अगर हमने ख़ुदा का इश्क़ और मुल्क व मिल्लत का लगाव खो दिया तो वह किस कारख़ाने में ढाला जाएगा।"

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (रह०)

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:11-12 नवम्बर – दिसम्बर 2022 ई० वर्ष:14

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष – दारे अरफ़ात)

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

मुद्रक

मो० हसन नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

हसद और बुग़्ज़ का अंजाम

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

"तुम्हारे अन्दर पिछली क़ौमों की एक बीमारी आ गयी है। हसद और बुग़्ज़ की बीमारी मूंड देने वाली है, मैं यह नहीं कहता कि वह बाल मूंडने वाली है बल्कि वह दीन का सफ़ाया करने वाली है।"

सुनन तिरमिज़ी: 2699

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 15रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला ख़ाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 150रू0

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

ग़म भी एक मंज़िल
-ए-
राहत का निशां होता है

नतीजा-ए-फ़िक्र : आमिर उस्मानी

दिल पे वह वक़्त भी किस दर्जे गिरां होता है
ज़ब्त जब दाख़िल-ए-फ़रियादो फ़ुग़ां होता है

कैसे बतलाएं कि वह दर्द कहां होता है
ख़ून बनकर जो रगो पै में रवां होता है

इश्क़ ही कब है जो मानूस-ए-ज़बां होता है
दर्द ही कब है जो मोहताज-ए-बयां होता है

जितनी जितनी सितम-ए-यार से खाना है शिकस्त
बारहा ख़ुद पे मुझे तेरा गुमां होता है

कितनी पामाल उमंगों का है मदफ़न मत पूछ
वह तबस्सुम जो हक़ीक़त में फ़ुग़ां होता है

इश्क़ सरतापा आतिश-ए-सोज़ां है मगर
इसमें शोला न शरारा न धुआं होता है

क्या ये इन्साफ़ है ऐ ख़ालिक-ए-सुबह-ए-गुलशन
कोई हंसता है कोई गिरिया कुनां होता है

ग़म की बढ़ती हुई यूरिश से न घबरा आमिर
ग़म भी एक मंज़िल-ए-राहत का निशां होता है

इस अंक में:

इस्लाम बोलता है.....3
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

इस्लाम एक सम्पूर्ण धर्म व जीवन व्यवस्था.....4
हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी

सीरत-ए-नबवी – कुरआन करीम के आइने में.....5
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

इस्लामी मीडिया – आवश्यकता एंव महत्व.....7
मौलाना सैय्यद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

मुस्लिम समाज की बुनियादी ख़राबियां.....9
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह0)

मज़हब और सियासत.....11
हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तैय्यब साहब (रह0)

इस्लाम हां-नहीं के दरमियान.....13
मौलाना मुहम्मदुल हसनी (रह0)

मुस्लिम न्याय पालन के शानदार नमूने.....17
मौलाना मुहम्मद इज्तिबा नदवी

आजादी के बाद.....18
मुफ्ती महफूज रहमान उस्मानी

हर व्यक्ति मिल्लत के मुक़द्दर के सितारा है.....19
मोहम्मद रफ़ी उमरी किलोरी

मुसलमान वैज्ञानिकों के कुछ अविष्कारे.....21
डाक्टर हफ़ीज़ुर्रहमान सिद्दीक़ी

परिवार नियोजन.....23
मौलाना ज़फ़र अहमद क़ासमी

कुरआन करीम में भ्रूण के विकास के चरणों 26

फ़िरऔन की लाश.....31
डॉक्टर मोरिस बुकाए

सम्पादकीय

इस्लाम बोलता है

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

व्यक्तिगत रूप से तो एक दो नहीं बल्कि शायद सैंकड़ों में इस्लाम की बड़ी हद तक तरजुमानी मिल सकती है। लेकिन सामूहिक रूप से अगर इस्लाम की तस्वीर तलाश की जाए तो मौलाना रूम की वो मिसाल याद आती है कि एक बार एक मर्द चिराग़ लेकर कुछ तलाश कर रहा था। किसी ने पूछा तो कहा कि इन्सान तलाश करता हूं, सब मिलते हैं इन्सान नहीं मिलता। आज यही स्थिति है, हर तरह के मुसलमान मिलते हैं लेकिन अपने बात व काम से पूरे पूरे इस्लाम की मिसाल पेश करने वाले मुश्किल से ही नज़र आंएगे।

इस्लाम और मुसलमान में बड़ा फ़र्क़ है। इस्लाम कुछ कहता है, मुसलमान के समाज में कुछ और नज़र आता है। मुसलमान मोहल्लों में तरह तरह की खुराफ़ात मौजूद हैं जिनका दूर से भी इस्लाम से कोई वास्ता नहीं हैं। जो इस्लामी शिक्षा से परिचित नहीं वो उन ही खुराफ़ात को इस्लाम समझते हैं और इस्लाम से अपरिचित होते हैं। अर्थ ये है कि मुसलमानों को देखकर इस्लाम को नहीं समझा जा सकता। इस्लाम खुद बोलता है। उसकी शिक्षा स्वंय गवाही देती है। अगर कोई उससे परिचित नहीं है वो इस्लाम को नहीं जानता।

आज सबसे ज़्यादा बेकारी मुसलमानों में नज़र आती है। समय नष्ट करना, बेकार के कामों में व्यस्त रहना, सुबह से शाम तक गप शप, चाय पीने और अख़बार पढ़ने में समय नष्ट कर देना। नौजवानों को अकारण घूमना फिरना, हर समय खेल कूद में लगे रहना, और इससे बढ़कर बेहयाई के कामों में लगना। ये सब वो चीज़ें हैं जो आम तौर पर मुस्लिम मुहल्लों में नज़र आती हैं। और अब तो इलेक्ट्रानिक मीडिया, टेली विज़न, कमप्यूटर गेम्स, और तरह तरह की फ़िल्मों ने नौजवानों को अपंग बना दिया है। जबकि नबी (स0अ0व0) की शिक्षा उसके विपरीत है। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) फ़रमाते हैं:

"इस्लाम की ये खूबी है कि मुसलमान बेकार की चीज़ों को छोड़ देता है।"

अगर कोई इस पर अमल नहीं करता और बेकार की चीज़ों में लगा हुआ है तो उसका इस्लाम नाक़िस है। अभी उसने इस्लाम की हक़ीक़त नहीं समझी।

ज़िन्दगी का एक एक लम्हा अल्लाह की एक अमानत है। इसको यूं ही गंवा देना उसकी नाक़द्री है। ये ज़िन्दगी अल्लाह ने इसलिये दी है कि अपने मालिक को राज़ी किया जाए और इसको इस तरह गुज़ारा जाए कि अल्लाह खुश हो। लोगों को फ़ाएदा पहुंचे और समय को नष्ट न किया जाए बल्कि उसे क़ीमती बनाने के लिये कोशिशें की जांए। इसलिये इस्लाम में बिना आवश्यकता अत्यधिक सोने से भी मनाही है।

वक़्त की हैसियत क़ीमती से क़ीमती चेक की है आदमी चाहे तो उसे कैश करा ले और चाहे तो उसको बेकार कर दे। वो लोग कामयाब है जो लम्हे लम्हे का जाएज़ा लेते हैं और अपना विश्लेषण करते हैं कि उन्होने अपने वक़्त को कहां लगाया। ये बुलन्दी की बात है कि आदमी ख़ैर के कामों में आगे बढ़े और ख़ैर के रास्ते को हाथ से जाने न दे।

दुनिया में सबसे ज़्यादा क़ीमती चीज़ वक़्त है। लेकिन सबसे ज़्यादा नाक़द्री उसी की होती है। अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में ज़माने की क़सम खा कर इसकी क़ीमत उजागर की है। लेकिन इसके तुरन्त बाद इसको स्पष्ट भी कर दिया है कि इन्सान इसकी क़ीमत को नहीं समझता और उससे जो फ़ाएदा उठाना चाहिये वो फ़ाएदा नहीं उठाताः

"जमाने की क़सम! बेशक इन्सान घाटे में है।" (अलकुरआन)

फिर आगे इसकी क़ीमत पहचानने वालों और उसकी सही क़द्र करने वालों का ज़िक्र किया गयाः

"हां जिन्होने माना और अच्छे काम किये और सही बातों को फैलाया और साबित क़दम रहने का माहौल बनाया।" (अलकुरआन)

अपने पैदा करने वाले पर यक़ीन, उस पर ईमान, हर भलाई की बुनियाद है और एहसान जताने का अहम तक़ाज़ा है। जिसने पैदा किया, आवश्यकता की चीज़ें उप्लब्ध करायीं। फिर अच्छे काम करना और उसके पैग़म्बरों के बताए हुए तरीक़ों पर करना ये भी इसी एहसान जताने का तक़ाज़ा है। ये ख़बर अपने तक महदूद न रहे बल्कि इसका माहौल बनाया जाए और इसके लिये कोशिशें की जांए। और इस राह की परेशानियों को सर झुका कर बर्दाश्त किया जाए और इसी का उपदेश दिया जाए।

.......(शेष पेज 12 पर)

इस्लाम एक सम्पूर्ण धर्म व जीवन व्यवस्था

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

इस्लाम एक सम्पूर्ण धर्म व जीवन व्यवस्था है और यह दीन अल्लाह की तरफ़ से उतारा गया है। इसको अक़्ल पर मस्लहतों पर और किसी मुल्क के माहौल पर नहीं छोड़ा गया वरना फिर यह होता कि हिन्दुस्तान का इस्लाम कुछ और होता मिस्र का कुछ और होता, सऊदी अरब का और होता, इंग्लैण्ड और अमरीका का दूसरा होता। इस्लाम का मॉडल दुनिया में अलग–अलग होते। आप आंख बन्द करके दुनिया के आख़िरी कोने तक चले जाइये, जहां मुसलमान हैं, 'नमाज़ का वक़्त आए' यही नहीं कि आप वहां नमाज़ पढ़ सकते हैं, बल्कि बेतकल्लुफ पढ़ा भी सकते हैं। कितने हिन्दुस्तानी हैं जो अरब मुमालिक में इमाम हैं। हमारे कितने मुदर्रिस अरब गये, फुज़्ला गये है, ख़ुत्बा देते हैं, हज करते हैं, वहां हज के तरीक़े बताते हैं। यह इस्लाम ही की ख़ुसूसियत है हम मराकिश गये, दमिश्क गये तो वहां यूनिवर्सिटयों की मस्जिद में जुमा के दिन हमसे नमाज़ पढ़ाने के लिये कहा गया। हमने वहां नमाज़ पढ़ाई, ख़ुत्बा दिया। हमें नहीं सोचना पड़ा कि यहां किस तरह नमाज़ पढ़ी जाती है और क्या–क्या करना पड़ता है। हमें नहीं पूछना पड़ा कि यहां ख़ुत्बा नमाज़ से पहले दिया जाता है कि बाद में।

एक बात और समझाना चाहता हूं कि इस्लाम भौगोलिक बदलाव का क़ायल है न ऐतिहासिक बदलाव का। यह भी समझने की ज़रूरत है कि इस्लाम में ऐसा कोई पक्षपात नहीं है कि एक वर्ग का दीन कुछ है और दूसरे वर्ग का दीन कुछ और है। पुराने मुस्लिम घरानों का दीन कुछ और है और नये–नये इस्लाम में दाख़िल होने वालों का कुछ और है। दीने इस्लाम ही एक दीन है जो अल्लाह के रसूल (स0अ0व0) लेकर आये। यह दीन आलमी है, दायमी है, अबदी है और रूहानी व मक़ामी व तबक़ाती है। इस दीन में किसी के लिये किसी क़िस्म की छूट नहीं है। खुल्फ़ाए राशिदीन थे, सलातीन थे, हारून रशीद हों, आलमगीर हों, शाहजहां हों और कोई और बड़े से बड़ा बादशाह हो सबके लिये एक दीन था। वही फ़राएज़, वही अरकान, वही इस्लामी तहज़ीब। सलाम सबका एक यानि 'अस्सलामुअलैकुम–वअलैकुमस्सलाम' यह नहीं कि आदाब–ए–अर्ज़ कह दिया या हाथ उठा दिया। इस्लाम ने पूरी दुनिया के लिये एक नक़्शा बना दिया है। कुरआन मौजूद है, हदीस मौजूद है, सीरत मौजूद है, तारीख़ मौजूद है। मुसलमान चौदह सौ साल से उसी पर चल रहे हैं। यही दुनिया का तन्हा दीन है जिसकी शक्ल अब तक नहीं बदली है। दूसरे मज़हब वह मज़हब नहीं है जो हमारे पैग़म्बर लाये थे। अभी एक किताब प्रकाशित हुई है 'इस्लाम ऑर दि ट्रू क्रिश्चिनिटी' जिसका ताल्लकु हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) की शख़्सियत से है। यह एक ईसाई की लिखी हुई है। इस किताब के लेखक ने भी स्वीकार किया है कि मौजूदा क्रिश्चिनिटी सेंट पॉल की बनायी हुई है। रोमन मेथालिजी है। हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) को सलीब पर लटकाया जाना या उसी तरह की दूसरी चीज़ें सेंट पॉल की गढ़ी हुईं हैं। अस्ली मसीहियत इस्लाम के मुताबिक़ थी। इसको तब्दील किया गया है। इस्लाम वाहिद मज़हब है जिसमें कोई रद्दोबदल नहीं की गयी। अपने ओरिजनल फ़ार्म में आज भी मौजूद है। हज़रत मौलाना सैय्यद सुलेमान नदवी (रह0) ने मुझे एक ख़त में लिखा था कि हिन्दुस्तान क़ौमों को खा जाने वाला है। यहां जो चीज़ पहुंचती है वह तहलील हो जाती हैं। अपनी अस्ल शक्ल खो देती है। यहां कितने ही ऐसे मज़ाहिब हैं जिन्होंने यहां घुल–मिल कर अपनी शक्ल को खो दिया। उनको पहचानना मुश्किल है। हिन्दुस्तान में आकर कुछ से कुछ हो गये। इस्लाम अल्हम्दुल्लाह अपनी पूरी शक्ल में मौजूद है। हम यहां से पक्का इरादा करके उठें कि हम सौ फ़ीसदी मुसलमान सौ फ़ीसदी इस्लाम में दाख़िल हों। यह नहीं कि आधा इस्लाम हो और आधा अपने ज़माने का रस्म व रिवाज हो, मसलहतें हों, ज़माने के तक़ाज़ें हों। यह नहीं हो सकता कि हम यहां रहें तो यहां की क़ौमों की तक़लीद भी करें। इनका भी रंग कुबूल करें उनके हम रंग हो जाएं। जिस तरह दूसरे लोग ब्याह–शादी करते हैं हम भी करने लगें। फ़र्क़ व इम्तियाज़ बाक़ी रखना पड़ेगा। घरेलू ज़िन्दगी हो या तिजारत का मैदान, ज़राअत हो या सिनअत व हरफ़त, क़ानून हो या मुआशरती ज़िन्दगी, शादी–ब्याह की तक़रीबात हों या ग़मी की, हर मौक़े पर हमें यह देखना पड़ेगा कि इस्लाम क्या चाहता है। हमें किसी वक़्त भी मनमानी करने की इजाज़त नहीं है। हमारी नमाज़ें हमारी इबादतें और हमारा जीना–मरना सब अल्लाह के लिये है।

सीरत-ए- नबवी

कुरआन करीम के आइने में

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

नुबूव्वत मिलने से पहले अल्लाह तआला की तरफ़ से आप (स0अ0व0) को ऐसे हालात से गुज़ारा गया जो इन्सानों के अपने अख़्तियार के सामूहिक व समाजी कारणों और प्रभाव का नतीजा होते हैं, और ऐच्छिक रूप से पेश आते हैं। उनके असर से इन्सान की मिज़ाजी हालत और काम करने की योग्यता की पहचान होती है। इसके लिहाज़ से देखा जाए तो किसी इन्सान को बेहतर से बेहतर इन्सान बनाने में जो हालात कार्य करते हैं, वो अल्लाह तआला ने आप (स0अ0व0) के लिये मुक़द्दर फ़रमाये, यतीमी से वास्ता पड़ा, जो एक तरफ़ से बेबसी और मायूसी का एहसास पैदा करती है, लेकिन अगर मुख़लिस और हमदर्द सरपरस्त मिल जाए तो बेबसी और मायूसी का एहसास ख़त्म होकर आत्मविश्वास की ताक़त पैदा होती है। जो आप (स0अ0व0) को हासिल हुई। जिससे आप (स0अ0व0) को बुलन्द अख़लाक़ी सतह की ज़िन्दगी मिली, जो आत्मविश्वास और बुलन्द नज़री का कारण बनी, इसका सुबूत ये है कि आप (स0अ0व0) को समाज में क़दरदानी और अच्छे गुमान का मुक़ाम हासिल हुआ कि सब आपको सादिक़ और अमीन कहने लगे, जो किसी दूसरे को नहीं कहते थे।

सादिक़ से मुराद कथनी और करनी की समानता और जैसा करना मुनासिब है वैसा करना। यही सिद्क़ के माने हैं। आप (स0अ0व0) को सादिक़ कहा गया। जिससे आप (स0अ0व0) की ज़िन्दगी में कथनी और करनी के अनुसार काम का बेहतर से बेहतर तरीक़ा पर होना मुराद है। और अमीन से मुराद अधिकारों व ज़िम्मेदारियों की बिल्कुल सही अदायगी है। आप (स0अ0व0) को सबने अमीन कहा कि आप (स0अ0व0) की ये विशेष विशेषता थी क्योंकि शिक्षा व शिक्षा का रिवाजी तरीक़ा आप (स0अ0व0) को समाज में नही मिला। जिसका फ़ाएदा ये हुआ कि आप (स0अ0व0) की तबियत और ज़हन की तश्कील केवल फ़ितरी दायरे में और ख़ानदानी मूल्यों के तहत हुई। किस उस्ताद के ख़्यालों का या इन्सानों के अख़्तियार के तालीमी व तरबियती व्यवस्था से प्रभावित होने का मौक़ा मिलने से आप (स0अ0व0) को साब्क़ा नहीं पडा, इस तरह जब आप (स0अ0व0) फ़ितरी सतह पर बेहतर से बेहतर और सभ्य व सांस्कृतिक विचार और उनके बनावटी तौर तरीक़ों से बचकर, ख़ालिस बेहतर से बेहतर फ़ितरी खुसुसियात के हामिल बन गये तो उसमें इज़ाफ़ा और तरक़्क़ी आसमानी तालीम के ज़रिये यानि वही के मुख़तलिफ़ तरीक़ों से आप (स0अ0व0) को दी जाने लगी ताकि आप (स0अ0व0) को फ़ितरी सतह पर जो सलाहियत और खुसूसियत हासिल हुई हैं, जो एक हौसलामन्द और उच्च मूल्य के पाबन्द इन्सान के बनने में मददगार बनती हैं, उनमें खुसूसी तौर पर ऐसा इज़ाफ़ा हो कि वो दूसरों को भी आला सिफ़तों का आदमी बना सके, ताकि दूसरों को दुरूस्त बनाने और अल्लाह का पैग़ाम सभी इन्सानों तक पहुंचाने की ज़िम्मेदारी आप पर डाले जाने पर इस राह में पेश आने वाले हालात में आप (स0अ0व0) को मदद देने ओर रहनुमाई का ज़रिया बने।

आप (स0अ0व0) सब बातों के बावजूद इन्सान थे, अलग–अलग हालात में इन्सानी ताक़त और कैफ़ियत इन्सानों के स्तर की थी इसलिये और कामों के लिये और तक़वियत की आवश्यकता थी, वो अल्लाह की वही के द्वारा कुरआन मजीद की शक्ल में और वही के दूसरे तरीक़ों से दी गयी, वही के ज़रिये रहनुमाई की मिसालें कुरआन मजीद में सूरह अज़्ज़ुहा में, सूरह अलम नशरह में और सूरह कौसर व दूसरी सूरतों में हमें साफ़ नज़र आती हैं। अलग–अलग हालात में मानवीय आधार पर आप (स0अ0व0) को जो चिन्ता होती, उसका हल अल्लाह की वही के ज़रिये फ़रमाया गया और तस्कीन की सूरत पैदा की गयी है। अबू लहब ने आप (स0अ0व0) के चचा होने के बावजूद आप की दीन की दावत के ख़िलाफ़ सख़्त विद्रोह किये और आप (स0अ0व0) के साथ तकलीफ़ देने वाला रवैया अपना करके बहुत रंजीद बनाया सख़्त शब्दों का प्रयोग किया। यानि (तेरे लिये बर्बादी हो) कहा। आप के सुकून के लिये वही के ज़रिये नाज़िल हुई आयत में फ़रमाया गया है कि उनकी बर्बादी और टूट–फूट तो उसको मिलेगी और दुश्मनी करने वाली बीवी को मिलेगी जो इस दुनिया में भी मेहनत की ज़िन्दगी गुज़ार रही है, और कुछ दिन की ज़िन्दगी के बाद बड़ी ज़िन्दगी में अल्लाह के सख़्त अज़ाब में मुब्तला होगी यानि वो तो बेख़ौफ़ी कर रहा है अपने को तबाह कर रहा है, आपको सोचने की ज़रूरत नही है।

इसी तरह जब आप (स0अ0व0) पर ताना कसा गया कि आप (स0अ0व0) के बेटा नही, जबकि अपनी औलाद का महत्व अरबों में बहुत ज़्यादा था, उनमें आपस में

लड़ाइयां होती थीं, किसी ख़ानदान में लड़के ज़्यादा होते थे तो उसकी जीत की सम्भावना ज़्यादा होती थी। जब आप (स0अ0व0) पर ये ताना कसा गया तो अल्लाह की वही के ज़रिये से सुकून दिलाया गया कि आप (स0अ0व0) को अल्लाह ने उससे बहुत बड़ी चीज़ अता की है। जो कसरत भी रखती है और आप (स0अ0व0) के जो विरोधी हैं उन्हीं का सिलसिला ख़त्म होने वाला है। और कई बड़ी सूरतों पूरी का पूरी आप की तक़वियत और सुकून का सामान रखने वाली नाज़िल की गयीं। जैसे सूरह क़सस है जिसमें हज़रत मूसा अलै0 का क़िस्सा बयान किया गया है कि बचपने में उनके सामने ऐसे हालात आये कि वो क़त्ल कर दिये जाते, लेकिन अल्लाह ने उनको बचाया, वो ग़ैरों और दुश्मनों में पले लेकिन अल्लाह ने उन ग़ैरों और दुश्मनों को ही उनकी हिफ़ाज़त का ज़रिया बना दिया और उनको महफ़ूज़ रखा, और वो देश छोड़ने पर मजबूर हो गये, वहां भी अल्लाह ने उनकी मदद फ़रमायी और फिर उनको नबी बनाया और नबूवत की वजह से खूंखार दुश्मनों से सामना पड़ा और दुश्मनों के शर से बराबर अल्लाह आपको बचाता रहा। और आख़िर में दुश्मनों को अल्लाह ने तबाह व बर्बाद कर दिया।

ये वाक़्ये आप (स0अ0व0) को पेश आने वाले वाक़्यों से बड़ी मुशाबहत रखते हैं और ज़ाहिर है कि इनके तज़करे से आप (स0अ0व0) की तक़वियत का सामान होता है। और इसी तरह सूरह यूसुफ़ नाज़िल फ़रमायी और बचपने में इनको मार डालने पर उनके भाई तुल गये लेकिन अल्लाह ने उनको बचाया और फिर बड़े सख़्त हालात में ग़ैरों में और बेइज़्ज़ती जैसे हालात में उनका पालन पोषण हुआ। अल्लाह तआला ने उनको ख़तरों से बचाया, आख़ीर में उनकी इज़्ज़त के असबाब पैदा किये और ऐसी इज़्ज़त अता फ़रमायी कि वो एक तरफ़ बादशाह के नायब बने और दूसरी तरफ़ उनको नबूवत अता फ़रमायी, और ये दोहरी इज़्ज़त मिली, इसलिये दूसरों के लिये रहनुमाई के तौर पर ये लफ़्ज़ कहे। जो इहतियात की ज़िन्दगी गुज़ारता है और मुश्किलों को सब्र व सुकून के साथ बर्दाश्त करता है, ऐसे अच्छे लोगों के अज्र को अल्लाह बेकार नही करता, (जो तक़वा अपनाता है औ सब्र करता है तो अल्लाह तआला एहसान करने वालों के अज्र को बेकार नही जाने देता है) इसी तरह आप (स0अ0व0) को दुश्मनों पर कामयाबी हासिल होने के हालात में जो सामूहिक और नफ़्सियाती कैफ़ियत पैदा हुई, उनमें भी आप (स0अ0व0) की रहनुमाई वही के ज़रिये से की जाती थी कि जिन से आप की रहनुमाई तो होती थी, और आपके मानने वाले और असहाब की तरबियत होती थी, इस तरीक़े से वो उच्च समाज क़ायम हुआ, जिसकी मिसाल मानव इतिहास में नही मिलती, ये सहाबा किराम का समाज था जो अपने नबी की अक़ीदत और मुहब्बत रखने की बिना पर उनकी मिसाल को देखते थे। और उनके काम को अपने लिये अच्छा नमूना समझते थे। मानो की उसी सांचे में ढले थे जो सांचा उनके नबी को अल्लाह तआला ने अता किया था। इसी तरह से अल्लाह की वही से केवल आपका ही प्रशिक्षण नही हुआ बल्कि आपकी ज़रिये से आपके सारे सहाबा की हुई। इन सारे परिणामों का अस्ल और अहम ज़रिया अल्लाह की आख़िरी किताब क़ुरआन मजीद रहा। और क़ुरआन मजीद में वही का वो हिस्सा रखा गया कि जिससे ईमान रखने वाले लाभ उठाते रहें ओर इत्तिबा का हुक्म हासिल कर सकें। और इसीलिये अल्लाह तआला ने इसको महफ़ूज़ रखने का वादा किया, और इसके इन्तिज़ाम की सूरतें तय फ़रमा दीं और इस इस्तिफ़ादे को ज़िक्र के लफ़्ज़ से ज़ाहिर फ़रमाया। जो क़ुरआन मजीद के नामों में से एक नाम है। फ़रमाया (अनुवादः हम ही ने ये नसीहत वाली किताब नाज़िल की और हम ही इसकी यक़ीनी हिफ़ाज़त करने वाले हैं)

इस तरह क़ुरआन मजीद में जिन बातों की शिक्षा दी गयी है और जो उच्च मूल्य व विशेषतांए बतायीं गयीं हैं वो आपकी जीवनी में पूरी तरह पायी जातीं थीं, और उनसे आपकी जिन्दगी क़ुरआन मजीद की छाप तो थी, उम्मुल मोमीनीन हज़रत आयशा (रज़ि0) का हुज़ूर (स0अ0व0) के साथ रिफ़ाक़त बहुत कम उम्र से हुई थी, और कम उम्र में आदमी का जिन बातों और जिन हालातों से सामना पड़ता है उसका नक्श और असर बहुत गहरा होता है। इसलिये उन्होने हुज़ूर (स0अ0व0) को जिन हालात में देखा, वो कम उम्र में देखा और इसका नक़्श ज़्यादा बेहतर तरीक़े से उनके दिल और दिमाग़ पर पड़ा इसलिये उनकी हदीसों से हुज़ूर (स0अ0व0) के हालात और बातों की बड़ी अच्छी तरजुमानी मिलती है। उन्होने आप (स0अ0व0) के अख़लाक़ व सिफ़ात के सिलसिले में ये फ़रमाया, आपके अख़लाक़ पूरा क़ुरआन थे, उनके एक जुम्ले को फैलाया जाए तो कई जिल्द की किताबें तैयार हो सकती हैं। वो बातें जो पेश की गयीं जिनका संबंध आपके मामलों और तरीक़ों से है दोनों में बड़ी अच्छी समानता है।

इस्लामी मीडिया – आवश्यकता एंव महत्व

मौलाना सैय्यद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

वर्तमान समय में मीडिया को वास्तविक सत्ता प्राप्त है। इसका महत्व कई बार दफ़ाई और तक़लीदी व्यवस्था से बढ़ कर हो जाती है। कई देश मीडिया पर सबसे ज़्यादा ज़ोर देते हैं। पश्चिमी देश इस पर अपने बजट का बड़ा हिस्सा ख़र्च करते हैं। कम्यूनिस्ट देशों ने मीडिया को पूरी तरह से अपना लिया है। यही कारण है कि वहां की पत्रकारिता अपने सभी रूपों के साथ शासको की सोच का आइना होती है। इसकी भरपायी और इसमें असर पैदा करने के लिये ये देश अख़लाक़ को बिगाड़ने वाले विषय, फ़िल्मी विषयों, और तफ़रीह के विषयों के प्रोगरामों में अपने विचारों को सम्मिलित कर देते हैं।

जहां तक ग़ैर पूंजीवादी पश्चिमी पत्रकारिता का संबंध है तो वो पूरी तरह से आज़ाद है। न उस पर सोच की पाबन्दियां हैं, न किसी फ़सलफ़े की हद तय की गयी है। इसके मद्देनज़र केवल दौलत की प्राप्ति, ख्याति है। वो उन सभी चीज़ों को छापने में बड़ी तेज़ी दिखाते हैं जो दिलों को मोह लेने दिल व दिमाग़ को बदल देने की ज़रा सी भी योग्यता रखती हो। यही कारण है कि वर्तमान पत्रकारिता विचारों की गन्दगी, बेहयाई और झूठ की छपायी का एक ज़रिया बन कर रह गयी है। दुनिया के बड़े अख़बार, अन्तर्राष्ट्रीय न्यूज़ एजेंसियों से ख़बर प्राप्त करते हैं और ये अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियां अख़बारों को चिन्तनीय ख़बरे पहुंचाती हैं। वो ख़बरों के चुनाव और उनको लिखने में अपनी सोच को शामिल कर देती हैं। कई बड़े अख़बारों के अपने प्रतिनिधी होते हैं जो विभिन्न इलाक़ों से रिपोर्टें भेजते हैं ये अख़बार के मालिकों के ज़हनसाज़ी करने की कोशिश करते हैं। इनमें की कई एजेंसियां सहयूनी हैं। अन्तर्राष्ट्रीय इंटेलिजेंस के मातहत हैं जो इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ बाल की खाल उधेड़ती हैं। इसका परिणाम है कि सभी अख़बार इस्लामी दुनिया के हालात ग़लत अन्दाज़ में पेश करते हैं।

मीडिया की दूसरी शक्ल रेडिया, टेलीविज़न की व्यवस्था है जो पत्रकारिता से ज़्यादा कारगर है और जिसके असर का क्षेत्र और बड़ा है। इसका कारण ये है कि पत्रकारिता का प्रभाव क्षेत्र पढ़े–लिखे या उनसे संबंधित लोगों तक सीमित है। लेकिन उसके विपरीत रेडियो की व्यवस्था का प्रभाव क्षेत्र उससे कहीं अधिक बड़ा है क्योंकि इससे बच्चे भी दिलचस्पी लेते हैं और मर्द–औरत, छोटे–बड़े, पढ़े–लिखे और जाहिल सब ही आनन्दित होते हैं। इसी तरह टेलीविज़न रेडियो से कहीं ज़्यादा असरदार है क्योंकि वो दृष्य के साथ और विश्लेषण के तौर पर प्रस्तुत करता है जिससे ज़िन्दगियों का प्रभावित न होना और ज़हन व दिमाग़ का असर न कुबूल करना नामुमकिन है। क्योंकि वो इन्सान को बाहरी माहौल ही से नही बल्कि उस माहौल से जोड़ता है जो हज़ारों मील के फ़ासले पर है।

उन्ही मीडिया में वीडियो कैसेट, सिनेमा और ड्रामें भी हैं जो पर्दे पर दृष्यों को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत करते हैं। जिनसे ज़हन साज़ी, ज़ौक़ आराई, समाज की तश्कील के विभिन्न दृष्टिकोण, ज़िन्दगी के हालात, लोगों के जज़्बात व तासुरात से जानकारी का काम लिया जाता है।

ये नयी मीडिया अपने अन्दर बहुत हद तक योग्यता रखती है और नये समाज को बनाने, नई नस्ल के प्रशिक्षण में इस्लामी समाज को इन साधनों की कहीं अधिक आवश्यकता है। लेकिन इन साधनों पर विभिन्न प्रकार से समाज को बिगाड़ने वाली संस्थाओं का तिलिस्म है। जिससे वो विचारों की क्रान्ति लाने, नये समाज को ढ़ालने का काम लेते हैं बल्कि वो इनसे इस प्रकार का काम ले रहे हैं, जिस तरह जासूसों से काम लिया जाता है। वो हर घर में प्रवेश कर रहे हैं और हर व्यक्ति उनका प्रभाव स्वीकार करता है। इन सभी

संस्थाओं ने अख़लाक़ के अध्याय में मर्दों और औरतों का संतुलन ही नही बल्कि अच्छे और बुरे का भेद ख़त्म कर दिया है यही कारण है कि इनकी ख़बरों मे अच्छी बातों की जगह बुरी बातों का तसव्वुर ज़्यादा है। इसी प्रकार इन संस्थाओं ने महिला स्वतन्त्रता के मतलब परस्त विचार को अपना लिया है। जिसके बाद उनकी हैसियत ख़बर देने वाली संस्थाओं के सामने बिना मूल्य के सामान सी हो गयी है।

मीडिया के लिये इस्लाम की रोशनी में शिक्षा के नये फ़लसफ़े की तश्कील होनी चाहिये और चिन्तकों और योग्य लोगों को और ज्ञानियों की एक जमाअत को इस प्रकार प्रशिक्षण देना चाहिये कि वो इस्लामी शिक्षा से जुड़ सकें और इस्लाम का ज़िन्दगी और इन्सान के बारे में जो विचार है उसका साथ दे सकें। कई शासकों ने इस्लामी पत्रकारिता, और इस्लामी दूरदर्शन संस्थांए भी स्थापित की जो इस्लामी फ़िक्र के आधार पर प्रोग्राम करती थीं और सभी इस्लामी अख़बारों को अख़बारी विषय उपलब्ध करती थीं लेकिन ज़ाहिर है कि इन संस्थाओं का क्षेत्र बहुत ही छोटा है क्योंकि ये सभी प्रयास व्यक्तिगत स्तर पर हुई हैं।

पत्रकारिता और लासलकी व्यवस्था (जो पूरी तरह से सहयूनी ताक़तों के प्रभाव में है) पश्चिमी देशों में वास्तविकताओं को तोड़ मरोड़ कर पेश करने और इस्लाम को बिगाड़ने में ज़बरदस्त रोल अदा किया है। इस्लामी दुनिया की पक्षपाती और बेइन्साफ़ी की तस्वीर खींच करके यूरोप और अमरीका में रहने वाले मुसलमानों और अरबों के ख़िलाफ़ बड़े घिनौने प्रोपगण्डे करते रहते हैं और उन्ही पश्चिमी न्यूज़ एजेंसियों से इस्लामी दुनिया के अख़बारों और दूसरे मीडिया के साधन संतोष करके अपने–अपने प्रकाशन को क्रमवार करते हैं और इस तरह इनके दामन में आ फंसते हैं। हक़ीक़त ये है कि जब तक हमारी मीडिया की स्थायी हैसियत न हो हमारी पत्रकारिता उन्नति प्राप्त, उसूल व नियम की पाबन्द न हो और हमारी तख़्लीक़ात दिलकश और ज़िन्दगी के लिये असरदार न हो उस समय तक न इस्लाम विरोधी साधनो पर क़ाबू पाया जा सकता है और न उन हालात का मज़बूती से मुक़ाबला किया जा सकता है।

पिछले कुछ दिनों में पत्रकारिता, रेडियो न्यूज़ एजेंसियां जैसे साधनों ने आम राय की हमवारी के सिलसिले में ज़बरदस्त काम किया है। इसने नफ़रत के योग्य व्यक्तियों को महानता व मुहब्बत के योग्य और मुहब्बत व महानता के योग्य व्यक्तियों को नफ़रत के क़ाबिल बना दिया है।

भारत में फ़िरक़ावाराना दंगों को भड़काने में इसी मीडिया का कमाल है कि भड़काऊ वीडियो का प्रयोग, मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़का देने वाली ख़बरों का फैलाव और हिन्दु मज़लूमियत की मनगढ़ंत भावुक ख़बरों ने पेट्रोल को माचिस दिखाने का काम किया और जनता इन ख़बरों को सुनने और आकर्षित व दिलफ़रेब अख़बारों को पढ़ने पर मजबूर है।

जब भी कोई ऐसा समय आता है जब एक इस्लामी संतुलित मीडिया के साधन की सख़्त आवश्यकता होती है तो जो हक़ का पाबन्द हो रास्ती और आज़ादी जिसका ख़ास मक़सद हो जो जनता को आसानी से उपलब्ध हो और लोगों के ध्यान को खींच सके और उसकी आवाज़ सुनी जाए, उसको पढ़ा जाए उसकी बातों पर ग़ौर किया जाए ताकि मुसलमान ठीक–ठीक राय स्थापित कर सके और उसकी रोशनी में अपनी ज़िन्दगी के खुतूत निश्चित कर सके।

आज इस्लामी समाज को ऐसी पत्रकारिता की आवश्यकता है जो न पश्चिमी पत्रकारिता की तरह बेलगाम होकर क़लमकारों, कालमनिगारों के दिल में जो आये उसको कोरे काग़ज़ पर उतार दे और न ही इश्तराकी पत्रकारिता बिना हाथ पांव के होकर बाहिरी दुनिया को अंधेरे में रखने, समाज के ग़लत हालात को पेश करने के सिवा कोई काम न कर सके और एक ख़बरनामा की हैसियत अपना ले बल्कि वो पत्रकारिता ऐसी हो कि दुनिया को ख़बरदार कराए। उसूल पसन्दी, एहसास, जिम्मेदारी, पर यक़ीन रखती है, निर्माणी तन्कीद से काम लेती है, और अपने क़ारी के जज़्बात का एहतराम उस समय तक करती है जब तक कि व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से किसी हैसियत से इस्लामी चिन्ता से मिलती जुलती न हो। वो ऐसी सहाफ़त हो जिसके अन्दर जिम्मेदारी का एहसास हो, अपना एक पैग़ाम रखती हो, कुछ उसूलों और ज़ाब्तों का पाबन्द हो।

मुस्लिम समाज की बुनियादी ख़राबियां

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०)

इस्लाम की बहुत सी बुनियादी चीज़ें ऐसी हैं, जिनका विभिन्न मुस्लिम क्षेत्रों में जाएज़ा लेने के बाद यह एहसास होता है कि अब मुसलमानों में वह चीज़ें बहुत कमज़ोर होती जा रही हैं, जबकि दीन–ए–इस्लाम में उनकी हैसियत रीढ़ की हड्डी जैसी है। दीन का जो ढांचा अल्लाह के रसूल (स०अ०व०) ने हमें दिया है, वह चीज़ें उसकी रीढ़ की हड्डी हैं। लेकिन अफ़सोस की बात है कि मुसलमानों का उनकी ओर ध्यान न देना आम होता जा रहा है, और यही वजह है कि आज देखने में दीन का काम बढ़ रहा है लेकिन वास्तव में घट रहा है। अगर जाएज़ा लिया जाए तो पता चलेगा कि हमने दीन का हुलिया बिगाड़ दिया है और दीन को सही तौर पर समझा ही नहीं है। जिसके नतीजे में दीन का जो असर हमारे पड़ोसियों पर पड़ जाना चाहिए, उसका कहीं नाम व निशान नहीं है। बस यह हाल है कि न अन्दर की हालत पूछने लायक़ है और न बाहर की।

दीन की जो अहम चीज़ें हमारे समाज से ओझल होती चली जा रही हैं, उनमें बुनियादी चीज़ें निम्नलिखित में देखिएः दीन–ए–इस्लाम में तौहीद का अक़ीदा (एकेश्वरवाद की आस्था) बिल्कुल बुनियादी चीज़ है। लेकिन तौहीद के अक़ीदे को लोगों ने बहुत आसान समझ लिया है और वह इस धोखे में हैं कि हम तो मोमिन हैं, हमको अक़ीदे की क्या ज़रूरत है? अस्ल में यह बहुत बड़ा धोखा है, हर वक़्त हर व्यक्ति को अपने ईमान और अपने अक़ीदे की फ़िक्र होनी चाहिए, इसलिए कि यह बात तो सबलोग जानते ही हैं कि अगर किसी के पास सोना हो, और उसने उसे अपने घर में किसी जगह रखा हो, तो वह बराबर चेक करता रहता है कि सोना सुरक्षित है या नहीं? बल्कि बहुत से एहतियात पसंद लोग तो अपना क़ीमती सामान बैंक के लॉकर में रखवा देते हैं और चेक भी करते रहते हैं कि ठीक से रखा है या नहीं? इसलिए कि दुनिया में जिस तरह सोने का बहुत महत्व है, उससे कहीं ज़्यादा दीन में तौहीद के अक़ीद का महत्व है। लेकिन आज हमारे दिलों में ईमान व अक़ीदे की अहमियत नहीं है, इसलिए कि हमें पुश्तैनी तौर पर यह दौलत मिल गयी है, लिहाज़ा इस बारे में किसी को चिन्ता नहीं कि उसके पास तौहीद का अक़ीदा बाक़ी है या नहीं? इसलिए कि यह भी हक़ीक़त है कि आजकल ईमान और अक़ीदे के चोर और डाकू बहुत हैं।

वर्तमान समय में ईमान व अक़ीदे के ऐसे डाकू और चोर हैं कि अगर आपने ईमान की ज़रा सी हिफ़ाज़त करनी छोड़ दी तो आपकी यह क़ीमती दौलत लुट जाएगी और उस क़ीमती माल की जगह भेष बदल कर कुछ और आपके पास आ जाएगा इसलिए कि आजकल जो चोर और ठग हैं वह नए–नए अंदाज़ से आते हैं। अतः यह संभव नहीं है कि आप उनका सामना भी कर सकें। एक साहब ने एक इलाक़े का हाल बताया कि वहां कोई बाबा आ गए, और उन्होंने कहा कि जिसके औलाद न होती हो वह फ़ौरन मेरे पास आ जाए और औलाद की दौलत से मालामाल हो जाए। ज़ाहिर है कि आजकल अक़ीदा सब ही का कमज़ोर है। इसीलिए यहां भी वही हुआ और सब लोग उसके पास भागे चले गए और फिर उसने सबको क़ाएदे से ठगा। लोगों से रुपए ऐंठ लिए, फिर वहां पन्द्रह–बीस दिन ठहरा और किसी को कुछ दे गया और किसी को कुछ दे गया और किसी से कह गया कि छः महीने में फ़ायदा होगा और लाखों रुपये लेकर फ़रार हो गया। अब ज़ाहिर है कि अगर वहां के मुसलमानों का अक़ीदा मज़बूत होता तो ऐसी लूट से बच जाते, इसलिए कि औलाद का होना या न होना अल्लाह के हाथ में है।

आज हर एक का अक़ीदा अन्दर से कमज़ोर हो गया है। इसीलिए सब इधर–उधर भागे चले जा रहे हैं। अगर हमारा अक़ीदा मज़बूत होता तो लोग कहीं न जाते, बल्कि अपने रब के सामने हाथ फैलाकर दुआ करते और काम बन जाता। लेकिन चूंकि अक़ीदा कमज़ोर है, इस वजह से हम भागे–भागे फिरते हैं। और ज़ाहिर सी बात है कि जब हमारा अक़ीदा–ए–तौहीद कमज़ोर हो गया तो हमारे यहां मुश्रिकों वाले काम, मुश्रिकों वाली बातें और उनकी सोच दाख़िल हो जाएगी। अगर हम मुस्लिम

समाज को देखें तो हमें नज़र आएगा कि कोई मुश्रिकों वाली बात कह रहा है, कोई उनके जैसा काम कर रहा है, कोई उनके जैसी सोच में पड़ा हुआ है।

मुश्रिक (बहुदेववादी) के बारे में कुरआन मजीद में साफ़ ऐलान है कि: "बेशक अल्लाह इसको माफ़ नहीं करता कि उसके साथ शिर्क किया जाए और उसके अलावा जिसको चाहता है माफ़ कर देता है।"

पता चला कि यह ऐसा गुनाह है कि इसमें यह बात बिल्कुल नहीं चलेगी कि फ़लां ने मुझे समझा दिया था या मुझे बिल्कुल ख़्याल नहीं रहा था। अल्लाह साफ़ कहेगा कि हमें पहले अपना अक़ीदा दिखाओ, सही है कि नहीं? अब अगर आप सोचें कि कह देंगे फ़लां बुज़ुर्ग आए थे और ऐसा–ऐसा बता रहे थे, अतः मैंने उनकी बात मान ली थी। ज़ाहिर है कि ऐसी बातों पर यही कहा जाएगा कि हमने तुमको अक़्ल सिर्फ़ दाल–चावल खाने को दी थी? तुमने हमारी बातों को गंभीरता से क्यों नहीं लिया? हमने साफ़ कह दिया था कि हम मुश्रिक को माफ़ नहीं करेंगे, सारे इन्सानो! सुन लो, हम सारे गुनाह माफ़ कर देंगे, लेकिन शिर्क माफ़ नहीं करेंगे। इस साफ़ ऐलान के बाद भी अगर आप कहेंगे कि मैं नहीं जानता था तो क्या कहा जाएगा कि तेरे घर में कुरआन रखा रहता था, तूने कभी क्यों नहीं पढ़ा। वहां कोई भी वजह काम न आएगी। इसलिए ख़ूब समझ लें कि कभी किसी के कहने–सुनने में नहीं आना है। तौहीद के अक़ीदे का सौदा किसी सूरत में गवारा नहीं करना है। चाहे तुम्हारे पास कोई कितना ही बड़ा बुज़ुर्ग चल कर आए, कितना ही बड़ा शेख़ बन कर आए कितना ही बड़ा आलिम बनकर आए।

शिर्क के बारे में रसूलुल्लाह (स0अ0व0) का ऐलान है: "मेरी शफ़ाअत का हक़दार वही शख़्स है, जो अल्लाह तआला के साथ ज़रा सा भी शिर्क न करता हो।"

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) और कुरआन मजीद के साफ़ ऐलान के बाद बहाने बनाने का हर दरवाज़ा बन्द हो गया है। हदीस में साफ़ कह दिया गया है कि उसी की सिफ़ारिश करूंगा जो शिर्क न करे। इससे पता चला कि मुश्रिक को रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की सिफ़ारिश भी नसीब नहीं होगी, चाहे वह मामूली दर्जे का मुश्रिक हो। इसलिए हमको शिर्क से बचने की बहुत ज़रूरत है। मुश्रिक के अच्छे काम भी कुबूल न होने की मिसाल ऐसे ही है, जैसा कि हममें से किसी व्यक्ति का खाता बैंक में न हो तो वह बैंक में रक़म जमा नहीं कर सकता, ठीक उसी और ज़रा सा भी उसके अन्दर शिर्क पाया जाता है तो वह चाहे कितने ही अच्छे काम करे, उसको कोई फ़ायदा नहीं मिलेगा।

दूसरी चीज़ जो मुस्लिम समाज में बहुत कमज़ोर हो चुकी है वह है इख़्लास (नेक नियत) की कमी। आज हमारे यहां से इख़्लास भी ख़त्म होता जा रहा है। आज हमारी यह हालत है कि हम जो भी काम करते हैं, उसको या तो बुरी नियत से करते हैं या बेनियत होते हैं। कोई भलाई का काम है जो हम बहुत अच्छे तरीक़े से कर रहे हैं, लेनिक होता यह है कि उसमें नियत ही नहीं होती। जबकि हदीस से मालूम होता है कि जो काम बिना नियत के हो वह कुबूल नहीं। इसलिए कि अल्लाह के यहां ख़ालिस काम कुबूल होता है, यानि मिलावट नहीं चलती और हम लोग यह समझते हैं कि जैसे यहां मिलावट करके हमारा काम चल जाएगा, ख़ुदा के यहां भी मिलावट चल जाएगी, ऐसा नहीं है। जब आप दुनिया में मशीनों से पता कर लेते हैं कि दूध में कितना दूध है और कितना पानी है, तो अल्लाह तआला से क्या चीज़ छिपी रह सकती है। उसकी मशीनें पूरी कायनात में लगी हुई हैं। जो कुछ दुनिया में हो रहा है वहां सबकुछ रिकार्ड हो रहा है और चेक भी हो रहा है कि किसका काम कितना ख़ालिस है और कितनी मिलावट वाला है। यही वजह है कि आज कामों में असर ख़त्म होता जा रहा है और ऐसा लगता है कि अब भलाई के कामों में असर नहीं रहा। इसलिए कि वाक़्या यह है कि अल्लाह तआला के लिए काम ही नहीं हो रहा है, बल्कि हम सब लोग अपने लिए काम कर रहे हैं।

तीसरी चीज़ जो बहुत कमज़ोर हो चुकी है, वह है ख़िदमत का जज़्बा अर्थात सेवा भाव। इस समय मुसलमानों में यह जज़्बा भी ख़त्म हो गया है। यहां तक कि हमारे दीनदार वर्ग से भी यह जज़्बा रुख़्सत हो चुका है। ज़ाहिर है कि जब दीनदार तबक़े का हाल यह है तो बददीन तबक़े का हाल यक़ीनन और बुरा होगा। आज हमारे दीनदार तबक़े वाले जो बड़े–बड़े अफ़सर हैं, उनके बेटे जो बड़े–बड़े डिग्री होल्डर हैं और बाहर कमा रहे हैं, और वहां इत्मिनान के साथ रह रहे हैं। उनके पिता यहां राज़ी हैं और वे वहां खुश हैं कि हम यहां हैं। बेचारे दो बूढे मां–बाप यहां पड़े हुए हैं। सिर्फ़ इसलिए कि ज़्यादा कमाएं इसीलिए माता–पिता की सेवा को ताक़ पर रख दिया है, जबकि मालूम होना चाहिए कि ख़िदमत से जन्नत मिलती है। कहा गया है कि जब मां–बाप बूढ़े हो जाएं तो उनको उफ़ भी न कहो, लेकिन यहां हाल बिल्कुल उल्टा है।

मज़हब और सियासत

हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तैय्यब साहब (रह०)

इस्लाम में मज़हब और सियासत अलग–अलग नहीं है। न मज़हब से अलग सियासत कोई चीज़ है और न सियासत से अलग मज़हब कोई चीज़ है। यह फ़र्क़ उन्हीं मज़हबों में निकल सकता है, जिन्होंने सिर्फ़ अल्लाह से ताल्लुक़ पर कुछ उसूल बतौर तसव्वुफ़ या जोगियत तहज़ीब नफ़्स की सई की है और इन्सानों को दुनिया के ताल्लुक़ात व लज़्ज़तों से अलग करके ख़ुदा से मिलाने की सूरत रखी है। उनमें तर्के दुनियाबीं माना अस्ल है कि आदमी दुनिया के तमाम मामलात, तमाम लज़्ज़तों और तमाम रवाबित को तर्क करके घर से बाहर औलाद व रिश्तेदारों व संबंधियों से यकसू होकर किसी पहाड़ के गोशे और दरिया के किनारे बैठकर यादे इलाही में लगा हुआ हो। ज़ाहिर है कि वहां ताल्लुक़ात की कसरत और हमागीरी कब बर्दाश्त की जा सकती थी, लेकिन जब मज़हब ने अल्लाह के साथ ताल्लुक़ के साथ–साथ बन्दों के साथ ताल्लुक़ और ताल्लुक़ मअन्नफ़्स के शोबे भी इसी तफ़सील से पेश किए हों। उसके यहां यह क़तअ ताल्लुक़ात और तर्के लज़्ज़ात की रहबानियत नातमाम इन्सानियत समझी जाती हो और तर्के दुनिया का मफ़हूम गोशागीरी न हो, बल्कि दुनिया की भीड़ में रहकर अदाए हुक़ूक़ हो वह सियासी और मुआशरती ताल्लुक़ात से अपने पैरों को कब अलग रख सकता था और उसे रहबानियत कब बर्दाश्त हो सकती थी?

पस उसके यहां जैसे दयानत जैसे मज़हब का जुज़्वे आज़म है वहीं सियासियात भी मज़हब का जुज़्वे अहम हैं और मज़हब और सियासत के अलग–अलग होने के कोई मायने नहीं। मज़हब और सियासत की यह तफ़रीक़ वैसे ही ग़लत है जैसे कि आज मज़हब और साइंस के बारे में कहा जाता है कि साइंस ने मज़हब की बुनियादों को कमज़ोर कर दिया है और यह दोनों एक साथ जमा नहीं हो सकते। हालांकि साइंस उन्हीं मज़ाहिब के साथ जमा नहीं हो सकता जिन्होंने तमद्दुन को मिटाकर रहबानियत दुनिया में क़ाएम की। लेकिन जो मज़हब तमद्दुनी हुक़ूक़, तमद्दुनी ज़रूरियात और वक़्त के तक़ाज़ों के मुनासिब मुआशरती इक्तिसादी ज़रूरियात की तकमील का हामी हो उसे साइंस से नुक़सान तो क्या पहुंचता, साइंस उसकी मुमदद व माउन ख़ादिम हैं ऐसे ही सियासत भी दीन की ख़ादिम और उसका एक जुज़्व अहम है। अलबत्ता उस सियासत की माने सियासते अम्बिया के नहीं बल्कि सियासते शरीया के हैं जिसकी बुनियादें इल्म व अख़लाक़, तक़वा व तहारत और फ़ज़ाएले आमाल पर है। और ज़ोर व ज़ाएल अख़लाक़ व आमाल को मिटाने के लिए दुनिया में भेजी गयी है, न कि इनकी तक़वियत के लिए और बाअल्फ़ाज़ दीगर सियासते नुबूव्वत मुराद है, सियासते मुलूकियत नहीं।

यह सियासत मज़हब का जुज़्वे आज़म है जिससे किसी हाल में क़तअ नज़र नहीं की जा सकती है। मगर इसी के साथ–साथ यह भी वाज़ेह रहे कि इन दोनों में दयानत अस्ल और मक़सूद बिज़्ज़ात है और सियासत उसके बक़ा व इस्तहकाम का ज़रिया और वसीला है। यही वजह है कि हज़ारहा अम्बिया अलै0 के सिलसिले में दयानात के अबवाब तो सबको दिए गए मगर सियासियात और जिहाद की मशरूईयत बाज़ के लिए हुई और बाज़ के लिए नहीं। अगर एक ही दर्जे के दोनों मक़ासिद होते तो यह तफ़रीक़ नामुमकिन थी। इसी तरह जिन अक़वाम को दयानत और सियासत दोनों दी गयीं जैसे बनी इस्राईल वहां भी इतनी तफ़रीक़ उमूमन देखी जाती है कि अम्बिया का सिलसिला अलग है और सलातीन का अलग। शाज़ व नादिर ही एक आध जगह जमा हुआ है। मगर मक़सूदियत दयानात की शाने दहां भी नुमाया रखी गयी कि दयानात का हुक्म नबी की तरफ़ से होता था और उसकी तनफ़ीज़ सलातीन और उमरा अद्ल के हाथ से। हां नबी करीम स0अ0 में यह दोनों शाखें लाकर जमा कर दी गयीं। आप बएक वक़्त ख़लीफ़तुल्लाह फ़िल अर्ज़ भी थे और मुज़ल्लीद दीने आलम भी। मगर अस्ल दीन था जो आपकी सल्तनत का महवर व मरकज़ रहा। यानि आपकी सारी इस्लामी सियासत दीन के महवर पर घूमती थी और सिर्फ़ इसलिए थी कि उसकी क़ूव्वत से अदामिर दीन निफ़ाज़ पज़ीर होते रहे और अज़रा व तरावीज़ दीन में कोई रूकावट न होने पाए, जिससे दयानत का मक़सूद बिज़्ज़ात होना और

सियासत का उसके हक़ में वसीला होना साफ़ वाज़ेह होता है। चुनान्चे कुरआन ने उसकी तस्रीह की है। यह लोग ऐसे हैं कि अगर हम उनको दुनिया में हुकूमत दें दे तो यह लोग नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और नेक काम करने का आर्डर दें और बुरे कामों से मना करें और सब कामों का अंजाम तो खुदा ही के अख़्तियारमें है।

यहां तमकीन फ़िल अर्ज़ यानि सल्तनत की गर्ज़ व ग़ाइयत दयानात के शोबों को क़रार दिया गया है, जिससे सल्तनत का इन उमूर के हक़ में वसीला होना ज़ाहिर होता है। जिसका राज़ यह है कि अम्बिया का मक़सद दुनिया में अमानत का फैलाना है जो ईमान और अमन की ज़मीन है और जिसे इन्सान के सिवा कायनात अर्ज़ व समा के किसी बड़े से बड़े जुज़ ने भी कुबूल करने से कानों पर हाथ धर लिया था। इस अमानत की ज़िद फ़ित्ना है। जो इसके हक़ में सद्दे राह होता है। यह फित्ना कभी इल्म की राह से आता है और कभी अमल की।

इल्मी फ़ित्ना का नाम फ़ित्नाए शुब्हात है और अमली शुब्हे का नाम फ़ित्नाए शहवात है। और ज़ाहिर है कि फ़ित्नाए शुब्हात जबकि इल्म नाफ़े में मुख़िल हैं तो वह जहल की क़सम से होगा और फ़ित्नाए शहवात जबकि अमले सालेह में मुख़िल है तो वह अज़ क़िस्म जुल्म होगा। इसलिए फ़ित्नाए मजमूआ जुल्म व जहल है। और अमानत मजमूआए इल्म व अख़लाक़, अम्बिया का मक़सद चूंकि अमानत फैलाना है जिसकी राह में यह फ़ित्ना ख़ललअंदाज़ होता था तो उसका दफ़िया ज़रूरी समझा गया और यह फ़ित्ना यानि जुल्म व जहल जबकि इन्सान में जुबली था तो जिबिल्लत का बदल दुनिया और लोगों के ख़िलफ़ तबअ शुब्हात से उन्हें निकालना कोई आसान काम न था कि बग़ैर ताक़त के महज़ वाज़ व पिन्द से पूरा हो जाए इसलिए सियासी कूव्वत की ज़रूरत पड़ी। पस ताक़त दयानात के मुस्तहकिम करने और उनमें इल्म व अख़लाकें नुबूव्वत पैदा करने का एक आला और जरिया हुआ ताकि ख़ल्के खुदा अमन व सुकून के साथ इस इल्म व ख़ल्क से अपने मक़सदे ज़िन्दगी यानि ताअत व इबादात इलाही के फ़राएज़ अंजाम देती रहे।

इसका लाज़मी नतीजा यह निकलता है कि इस्लामी सियासत और मुसलमानों की किसी सियासी जद्दोजहद का मक़सद वह कभी नहीं हो सकता जो आज कि अस्री सियासतों में पेशे नज़र रखा जाता है जिसका तमाम तर खुलासा सिर्फ़ तीन चीज़ें होती हैं, ज़मीन, ज़र और जाति इक़्तिदार। आज के सियासी और जंगी इक़्तिदामात की आख़िरी मंज़िल और हुकूक़ तलबी का आख़िरी मेयार उसके सिवा कुछ नहीं कि फ़लां–फ़लां ख़ित्ता जुग़राफ़ियाई हैसियत से चूंकि फ़लां मुल्क या क़ौम का हक़ है लिहाज़ा उसे मिलना चाहिए। या फ़लां–फ़लां रक़्बे में फलां क़ौम का तिजारती निज़ाम क़ौमी या नस्ली या वतनी हुकूक के मातहत क़ायम होना चाहिएया फ़लां रियातस पर फ़लां शहंशाही का इक़्तिदार क़ायम होना चाहिए वरना फिर जंग है।

ज़ाहिर है कि पहली सूरत में ज़मीन दूसरी सूरत में ज़रत और तीसरी सूरत में एक क़ौम का ज़ाति इक़्तिदार निकलता है जिसे जंग के लिए वजहे जवाज़ और काफ़ी हुज्जत समझ लिया जाता है। आज की दुनिया की दो तिहाई आबादी इन्हीं तीन वजहों से कट मरने और सर फुटव्वल के अज़ाब में मुब्तिला हैं।

शेषः इस्लाम बोलता है

दुनिया का इतिहास बताता है कि वही लोग कामयाब हुए हैं जिन्होने वक़्त की क़ीमत को पहचाना है वो वर्ग उलमा या मशाएख़ का हो या ज्ञान या शिल्प के माहिरीन का हो, वो साइंसी खोज करने वाले हों या मुहक़्क़िकीन या फ़ुज़ला की जमाअत हो। हर एक के हालात बताते हैं कि उनकी कामयाबी की बुनियाद समय की कदर व कीमत पर रही है। हर मैदान में इसकी मिसालें मौजूद हैं।

यही इस्लाम सिखाता है और अपने मानने वालों को इसी की शिक्षा देता है। लेकिन जिस तरह मुसलमानों में बहुत से इस्लामी हुक्म के बारे में ग़फ़लत बढ़ती जा रही है वही हाल इस अहम हुक्म का भी है। मुसलमानों को देखकर बहुत से ज़हनों में ये ख़्याल पैदा होता होगा कि इस्लाम में वक़्त की शायद कोई बड़ी क़ीमत नहीं है। जबकि एक सूरह इसी विषय से संबंधित उतरी है। वाक़्या यही है कि अगर मुसलमानों को देखकर इस्लाम समझने की कोशिश की जाए तो शायद इस्लाम से दूरी बढ़ती चली जाए। इसके लिये इस्लामी शिक्षा और आदेशों को समझने की आवश्यकता है। और रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की मुबारक ज़िन्दगी को देखने की ज़रूरत है। आज के हालात यही बताते हैं कि मुसलमानों को देखकर इस्लाम से दूरी हो रही है। मगर इस्लाम खुद बोलता है। लोग खुद इस्लाम के अध्ययन की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इसका कारण केवल यही है कि दुनिया के बाक़ी धर्म अपनी हक़ीक़त खो चुके हैं। उनकी किताबें नष्ट हो चुकीं, जबकि कुरआन मजीद के बारे में सब सहमत हैं कि वो जैसा चौदह सौ साल पहले था वैसा आज भी है।

इस्लाम हां-नहीं के दरमियान

मौलाना मुहम्मदुल हसनी (रह०)

इस्लाम की कहानी खुद उसके अपने घर में बहुत दर्दनाक है। यह इस्लाम की कहानी है जो अलग–अलग तरह की ज़ंजीरों, बेड़ियों और तौक़ में जकड़ी हुई है। वो इस्लाम जिसके रास्ते में जगह–जगह रुकावटें खड़ी कर दी गयी हैं। जिसकी राह में कांटे बिछाए गये हैं। जिस पर निगरानी और हिसाब का डरावना साया है। जिसके सरपरस्त पर मौत की तलवार लटक रही है। जिसकी पीठ पर इमाम अहमद बिन हम्बल (रह0) की सुन्नत ताज़ा करने के लिये खोल दी गयी है और जिसके लिये हर ज़मीन में दिल व दिमाग़ की खिड़कियां और सुनने के रास्ते पूरी तरह बन्द कर दिये गये हैं।

वो इस्लाम जिसको तलवार व हिकमत के ज़ोर से एसेम्बली, पार्लेमेन्ट, अदालत, यूनिवर्सिटी, दफ़्तरों और सभी सभ्यता व संस्कृति की संस्थाओं से निकाल दिया गया है और उसकी अपील सुने बग़ैर इसका केस अदालत से ख़ारिज कर दिया गया।

वो इस्लाम जिसके घरवालों जिसके भाइयों और दोस्तों ने केवल इसी पर बस नहीं किया वो मैदान छोड़ कर चारदिवारी में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारे, उन्होने कई बार इसको ज़बरदस्ती घर से निकाल दिया और कभी साज़िश करके खुद निकलने पर मजबूर कर दिया। इसलिये अगर आप उनमें से किसी एक के घर में दाख़िल हो जांए तो कई बार आपको ये महसूस भी न होगा कि आप किसी मुसलमान के घर में है। वहां आपको इस्लामी हुक्म, और इस्लामी सभ्यता की कोई झलक और उसकी कुछ इज़्जत व हुरमत नज़र न आयेगी।

कुछ लोग ज़रा ज़्यादा रहम दिल और वज़ादार साबित हुए हैं। उन्होने अपने मां–बाप को इसकी बहुत इज़्ज़त करते हुए और उससे मुहब्बत का बर्ताव करते हुए देखा था। इसलिये उन्होने इसको घर से निकालने की हिम्मत तो नहीं की, लेकिन जिस तरह किसी पुरानी चीज़ और बूढ़े ख़ानदानी नौकर को घर के निचले हिस्से मे किसी कोठरी में जगह दे दी जाती है। इसी तरह उन्होने इसको भी घर के एक नाक़ाबिले इस्तेमाल और ख़राब कमरे में जगह दे दी। घर का बचा खुचा खाना इसको भिजवा दिया जाता, रमज़ान आता तो अफ़तार व सहरी भी भिजवा दी जाती, ईद में सेवईं से स्वागत किया जाता, और मारकीन का एक नया जोड़ा भी उसे दे दिया जाता है। और इस तरह मानो नायलान और टिशू के कपड़ों की ज़कात अदा हो जाती है। बक़रीद में एक रूमाल में रखकर थोड़ा सा गोश्त भी भेज दिया जाता है और खाने के वक़्त एक प्लेट पुलाव भी। ये सब इसलिये होता है कि पूर्वजों से इसका बहुत गहरा संबंध था। और किसी ज़माने में इसने बहुत बड़े बड़े काम किये थे।

वो इस्लाम जिसको वर्तमान युग में हमेशा "नहीं" से वास्ता पड़ा। और जिसके कान एक हां सुनने के लिये तरस गये। जिसको न केवल दुश्मनों की ज़मीन में "नहीं" कहा गया बल्कि खुद उसके वतन में भी इसको यही "नहीं" की आवाज़ें सुननी पड़ीं।

इसको तुर्की, मिस्र, इन्डोनेशिया, पाकिस्तान हर जगह यही मकरूह आवाज़ सुनाई दी, हालांकि ये देश अपनी संख्या, राजनीतिक ताक़त शासन व हुकूमत के एतबार से इस्लामी दुनिया के देशों में पहली सफ़ के देश हैं। और इनमें से किसी एक देश का मुख़लिसाना "हां" न केवल इस्लामी देश बल्कि पूरे मानव जगत की तक़दीर बदलने के लिये काफ़ी था।

वो इस्लाम जिसके होंट हिलने और क़दम उठने से पहले ये वारनिंग दे दी गयी कि ख़बरदार एक लफ़्ज़ भी ज़बान से न निकले और एक इन्च भी कदम अपनी जगह से न हटे।

वो इस्लाम जिसके दस्तूर व क़ानून की एक बार और जिसकी शरीअत का एक भाग भी लागू नहीं किया गया। जिसके किसी हुक्म पर अमल नहीं किया गया। और फिर पूरी बेहयाई, बद्दयानती और खुद फ़रेबी के

साथ ये ऐलान बल्कि ये फ़ैसला कर दिया गया कि इस्लाम अब जीवन के मार्गदर्शन के योग्य नहीं है। समाज और सोसाइटी को इससे कोई फ़ाएदा नहीं पहुंच सकता। इसमें किसी राजनैतिक व शासकीय समस्या के हल करने की योग्यता नहीं। और वो एक बेकार चीज़ (Spent Force) है।

वो इस्लाम जिसको अपने मक़सद, राजनैतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिये और मुसलमान के दिल व दिमाग़ को ताज़ा करने के लिये ख़ूब इस्तेमाल किया गया। और इसकी दिल खोलकर तारीफ़ की गयी। यहां तक कि मुसलमान के दिल की धड़कनें उसके साथ जुड़ गयीं। उन्होने दिल व जान, पाक आंसू और गरम ख़ून के साथ उसकी राह की हर क़ुर्बानी सर झुका कर गवारा की। लेकिन जब ये ख़ून रंग लाया, और ये क़ुर्बानी और कोशिश सामने आयीं और उन देशों में शासन की बाग़डोर अच्छी तरह इन लोगों के हाथ में आ गयी तो उन्होने बहुत बे परवाही और शान बेनियाज़ी अपने हाथ झटकते हुए ग़रीब इस्लाम को ये जवाब दिया कि तुमने अपना फ़र्ज़ पूरा कर दिया। और अपना पार्ट अदा कर चुके। अब तुम्हारी जगह कोल्ड स्टोरेज (Cold Storage) और लाइब्रेरियों मे होगी, या जेल की कालकोठरियों और सलाख़ों में, हां चूंकि कुर्सी शासन और हुकूमत के तख़्त तक पहुंचने में तुमने हमारा बहुत साथ दिया था, बल्कि ज़्यादा सही शब्दों में हमने तुमसे बहुत फ़ाएदा उठाया, तुम्हारी जान बख़्शी जाती है। तुम मस्जिद की किसी कोठरी में रह सकते हो। अगर कहो तो शाही मस्जिद लाहौर या मस्जिद सैय्यदना हुसैन क़ाहिरा में तुम्हे इमाम व ख़तीब की जगह भी दी जा कसती है। तुम बहुत बड़ा और अच्छा अमामा बांध कर आंखों में सुरमा लगाकर और गा गा कर अरबी या उर्दू जिस ज़बान में चाहो ख़ुत्बा पढ़ सकते हो, और जोश भरी तक़रीर में इक़बाल के शेर भी पढ़ सकते हो। और फिलिस्तीन को आज़ाद करने की धमकी भी दे सकते हो। लेकिन ख़बरदार इसके आगे कुछ न सोचना, वरना हमारा ये "अस्थाई संधि" भी ख़त्म समझी जाएगी। और हम हर प्रकार की कार्यवाही करने के लिये आज़ाद होगें।

वो इस्लाम जिसको रेस के मैदान में लाया गया और फिर ये ऐलान कर दिया गया कि आज उसका इम्तिहान है। और देखना है कि उसका घोड़ा आगे निकलता है कि हमारा, फिर तमाशाइयों की आंखों में धूल झोक कर इसको रस्सियों से अच्छी तरह बांध दिया गया। इसके पैरों में बेड़ियां डाल दी गयीं। ग़ैर इस्लामी नज़रियों और छोटी क़ौमियतों के खच्चर और गधे इस रेस में पूरी तरह आज़ाद छोड़ दिये गये, बल्कि उनको हकाया और दौड़ाया भी गया और फिर कहा गया कि ये देखो! इस्लाम का घोड़ा तो एक क़दम भी नहीं चल पाता। ये मुक़ाबला क्या करेगा। हालांकि ये वही इस्लाम का अस्ली अरबी घोड़ा है जो अगर उन गधों और खच्चरों की रवानगी के बरसों और सदियों बाद भी आज़ाद छोड़ दिया जाता तो अपने टापों से पश्चिम व पूर्व दोनों को रौंद कर रख देता, और कहने वाला बादलों के किसी टुकड़े को देखकर दोबारा ये कहने पर मजबूर होताः "जहां तेरा जी चाहे जाकर बरस जा, तेरा ख़िराज व आमदनी बहरहाल मेरे ही पास आयेगा।"

वो इस्लाम जिसका चोर के हाथ काटने का क़ानून ये कह कर लागू नहीं किया गया कि ये दरिन्दगी है। सूद की निंदा का ये कह कर विरोध किया गया कि ये असम्भव नाकाबिले अमल है। बेपर्दगी की मनाही पर ये कहा गया कि ये रूढ़िवादिता की निशानी है। ज़िना की सज़ा पर ये कहा गया कि ये अज़ाब है। कुफ्फ़ार और मुश्रिकीन और अल्लाह व रसूल के दुश्मनों की ये कह कर पैरवी और उनकी पहचान अपनाने की मनाही को ये कहा गया कि ये दुश्मनी की फ़ितरत है। दीनी शऊर, आख़िरत पर ईमान, ज़मीर की निगरानी, नफ़्स और इच्छाओं का विरोध, खुदा के ख़ौफ़ और उसकी हराम की हुई चीज़ों से इस तरह भागना जिस तरह कोई स्वस्थ मनुष्य बीमारी से भागता है। और इसकी रज़ामन्दी और ख़ूशनूदी की ऐसी तलब और प्यास जिस तरह रेगिस्तान के किसी प्यासे को मीठे पानी की प्यास होती है और उसके हुक्म को सभी मसलों और ज़रूरतों और इच्छाओं व मांग पर बनाए रखने से संबंधित ये फ़ैसला किया गया कि ये बुज़ुर्गों के क़िस्से कहानियां और सालहीन की हिकायात हैं, जिसकी राकेट और सय्यारों के युग में कोई गुन्जाइश नहीं और इस उन्नति प्राप्त युग में, धर्म सोसाइटी में कोई उन बातों को सुनना भी पसन्द नहीं करेगा।

वो इस्लाम जिसका कानून तो कोई लगाया नहीं गया, और जिसकी बात तो कोई नहीं मानी गयी, लेकिन ये बिना हिचक कह दिया गया कि इसका क़ानून न

ज़िन्दगी का साथ दे सकता है और न किसी समाजी, सामूहिक, राजनैतिक व आर्थिक समस्या को हल कर सकता है।

वो इस्लाम (इस्लामी दुनिया के शासक मुझे माफ़ करें) जो मस्जिदों से, धार्मिक औक़ाफ़ और धार्मिक संस्थाओं से, धार्मिक किताबों धार्मिक पत्रिकाओं से भी ख़ारिज कर दिया गया। और वो इस तरह कि इसके ज़िम्मेदारों की हर हर क़दम पर निगरानी होती है। इसके हर हर भाग पर कड़ी नज़र रखी जाती है, बल्कि उन जगहों पर पालिसी के तौर पर ऐसे आदमियों को तैनात किया जाता है जो शासन के मिज़ाज के आदी हों। और खुदा व रसूल के हुक्मों व हिदायतों से अधिक सरकारी हुक्मों व हिदायतो पर अमल करते हों। जबकि वो इसमें एक हद तक और कुछ हालात में मअजूर इस्लाम ही की तरह मजबूर हैं।

वो इस्लाम जिनके हक़ परस्त, हक़ बोलने वाले और नुमाइन्दे फ़ांसी के तख्ते पर चढ़ा दिये गये, उनका खून पानी की तरह बहाया गया, उनको जेल की सलाख़ों और अंधेरी कोठरियों में जानवरों की तरह भर दिया गया। सर्दी के मौसम की अंधेरी रातों में उनकी नंगी पीठ पर कोड़े बरसाये गये, उनके पीछे खूंखार शिकारी कुत्ते छोड़े गये, उनको बर्फ़ की धुली हुई सिल्लियों पर रात बिताने के लिये मजबूर किया गया। और ऐसी मानवताहीन सज़ाएं दी गयीं जिनको सुनकर रोंगटे खड़े होने लगते हैं। उनकी जाएदाद ज़ब्त कर ली गयी। उनकी संस्थाएं बन्द कर दी गयीं। उनके अख़बारों पर पाबन्दी लगा दी गयी, सिवाए उन लोगों के जो जीवन के संघर्ष से अलग हो गये। और मैदान उन ज़ालिम बेज़मीर, बेदर्द, पेशावर और ग़रज़परस्त लोगों के लिये ख़ाली कर दिया जो खुदा की ज़मीन में फ़साद फैलाना चाहते हैं।

वो इस्लाम (मुझे इस सराहत के लिये माफ़ किया जाए) जिसको मिस्र की क्रान्ति, ईराक़ की क्रान्ति, सीरिया की क्रान्ति, हर जगह केवल एक जवाब मिलाः "नहीं" पाकिस्तान में भी इसको यही सख़्त जवाब मिला, और इन्डोनेशिया और तुर्की मे भी। और अगर मुझे ज़रा और साफ़ बोलने की इजाज़त दीजिए तो मैं कहूं कि वो इस्लाम जिसको मिस्र की क्रान्ति के आरम्भ में और शाह की जिलावतनी के समय फिलिस्तीन के जिहाद और स्वेज़ के युद्ध में "हां" कहा गया। और देश की पालिसी बनाते समय क़ानून बनाने में और अपनी क्रान्ति के मेनीफ़िस्टो में "नहीं" कहा गया।

पाकिस्तान की मांग के समय "हां" कहा गया और नियम बनाते समय अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून बनाते समय "नहीं" कहा गया। अलजज़ाएर की जंग के समय जिसमें दस लाख आदमियों ने कुर्बानी दी हां कहा गया और हुकूमत बनाने के बाद देश का ढांचा बनते समय और पालिसी तय करते समय "नहीं" कहा गया। वो इस्लाम जिसको ख़ानकाहों, ज़िक्र के हल्क़ों, मीलाद की महफ़िलों, बयानों के जलसों, और जोश भरी दीनी तक़रीरों (इस शर्त पर कि देश के हाल पर कोई बयानबाज़ी न हो) में "हां" कहा गया।

जिसको अफ़तार की दावतों, रेडियों से रमज़ान के प्रोगामों, इसके फ़ज़ाएल पर तक़रीरों, नातिया शायरी और कलाम–ए–इक़बाल में हां कह दिया गया।

जिसको अब्दुल बासित, अब्दुस्समद, और मुस्तफ़ा इस्माईल (1) (अरबी दुनिया के दो सबसे बड़े क़ारी जो अपने ज़बरदस्त मुआवज़े के बावजूद हर जगह बुलाए जाते हैं उनके लिये जलसे होते हैं, लोग जमा होकर सुनते हैं, और नसीहत हासिल करने के बजाए अच्छी आवाज, और फ़न की दाद देते हैं) की तजवीद व किरआत, इस्लामी देशों के वफ़ूद को कुरआन मजीद के रिकार्ड और मज़हबी किताबों की पेशकश के वक़्त बल्कि जिसको (मौसूआ अब्दुल नासिल लिल फ़िक़) जमाल अब्दुल नासिर के नाम पर मिस्र में फ़िक़ का एक मजमूआ प्रकाशित हुआ है। की तरतीब व तालीफ़ के वक्त हां कह दिया गया। लेकिन इस फ़िक़ पर अमल दरआमद और इस क़ानून के लागू होने के मौक़े पर और तालीम व तरबियत के निज़ाम और देश के सामूहिक चिन्तनीय और राजनैतिक ढ़ांचे के निर्माण के समय इसको पूरी सफ़ाई के साथ और बग़ैर किसी हिजाब के "नहीं" कह दिया गया।

वो इस्लाम जिसको लियाक़त अली ख़ां की इस तक़रीर में तो हां कहा गया जिसमें उन्होने कहा कि, "पाकिस्तान हमारी एक प्रयोगशाला है हम इसके द्वारा दुनिया के सामने ये साबित करेंगे कि तेरह सौ साल पहले का इस्लामी क़ानून और इस्लामी उसूल कितनी योग्यता और मूल्य रखते हैं।" और नियम के निर्माण के समय "नहीं" कहा गया।

वो इस्लाम जिसको ये समझ कर कि ताज और

कुर्सी इसका नाम लिये लिये बग़ैर और इसका बोर्ड लगाए बग़ैर हाथ नहीं आती। हां कहा गया। फिर ये देखकर कि वो इच्छाओं और अनानियत का दुश्मन और ऐश व इशरत व फ़िज़ूल ख़र्चियों की राह में रोड़े की तरह है, वो हमारी आज़ादी और बेक़ैदी में रुकावट डालता और पाबन्दी लगाता है। इसको "नहीं" कहा गया।

वो इस्लाम जिसको निकाह और वलीमे के मसलों, कुअें में कोई नापाक चीज़ गिर जाए तो उसकी पाकी के मसाएल और और हज के मसाएल और फ़ज़ाएल के वक़्त तो हां, कहा गया। और औरत–मर्द के मिलन की मनाही, जिस्मफ़रोशी, शराब, सुअर, नाच, व नग़्मा, और मुजस्समा साज़ी की हुरमत, इस्लामी सज़ाओं के लागू होने और अल्लाह के हुक्म के लागू होने के समय "नहीं" कहा गया।

जिसको तुर्की का चुनाव जीतने के लिये हां कहा गया, अरबी में अज़ान की इजाज़त दी गयी, दीनी मदरसे खोले गये, मस्जिदें बनायीं की गयीं, और उनमें इमाम निश्चित किये गये, दीनी संस्थाओं के हौसले बढ़ाए गये, और सादा लौ तुर्की के इस्लाम के शैदाई तुर्की की क़ौम को खूब सब्ज़बाग़ दिखाए गये और शासन प्राप्त करने के बाद में "नहीं" कहा गया।

वो इस्लाम जिसको इस्लामी कान्फ्रेंसों और इस्लामी क्लोकेम में रिज़ोलूशन पास करते समय और बजट पेश करते समय, इस्लामी नुमाइन्दों और गिरोहो की हौसला अफ़ज़ाई की गयी और उनकी ख़िदमत व ज़ियाफ़त में, इस्लामी देश के छात्रों के लिये चालिस चालिस इमारतों के निर्माण में हां कहा गया, लेकिन शरई हुक्म और इस्लामी सज़ा के लागू करने, व्यक्तिगत व सामूहिक जीवन में खुदा की इताअत फ़रमाबरदारी, और उसके आदेश की पूर्ति में "नहीं" कहा गया।

वो इस्लाम जिसको हमारे वर्तमान इतिहास में एक बार बहुत धीरे और बहुत हल्की आवाज़ में हां मिला तो इसका नतीजा ये हुआ कि उस देश से चोरी समाप्त हो गयी। सोनार रुपयों के ढ़ेर छोड़ कर नमाज़ के लिये मस्जिद चले गये और किसी ने उसको हाथ भी न लगाया। शराब पीने और ब्याज लेने के वाक़्ये या तो समाप्त हो गये या बहुत कम रह गये। और दुश्मनों ने भी स्वीकार किया कि ये केवल दो तीन इस्लामी सज़ाओं की बरकत है जिससे इतने कम समय में अक़्ल को हैरत डाल देने वाले परिणाम ज़ाहिर हुए। {सऊदी अरब की तरफ़ इशारा है} वो इस्लाम जिसके एक आदेश की पूर्ति अमल के परिणाम में क़त्ल और ख़न्जर ज़नी के वाक़्यात ख़त्म हो गये। पुलिस थाने में रिपोर्टें जाना बन्द हो गयीं, ज़ख़्मी होने वालों में ग़ैर मामूली कमी हो गयी। पुलिस के उड़न दस्तों को बहुत कम मेहनत करनी पड़ी। और दूसरे जुर्मों के बन्द करने की ओर ध्यान देने का अधिक मौक़ा मिला। {ईरान के शहर क़ुम से निकलने वाले एक सन्जीदा माहनामा में पुलिस की रिर्पोट की रोशनी में कुछ अंक प्रस्तुत किये गये हैं, जिससे मालूम होता है कि रमज़ान के दिनों में रोज़ा की बरकत से जुर्म की कमी हई और थानों में काम किस हद तक हल्का हो गया}

वो इस्लाम जिसको नहीं कहा गया तो ये परिणाम निकला कि रिश्वत आम हो गयी, लड़की ने अपने बाप को क़त्ल करने में शर्म महसूस न की, बाप ने अपनी औलाद का गला काटने में, अपनी बीवी को जानवर की तरह ज़िबह करने में कोई परहेज़ न किया, अपहरण, चोरी, खुदकशी, खुलकर व ऐलान करके जिस्मफ़रोशी और आख़िरी दर्जे की बदअख़लाक़ी और चरित्रहीनता इस योग्य भी न रही कि इसका नोटिस लिया जाए। और जमाअतों, क़ौमों, क़बीलों, बिरादरियों और शहरियों में कशमकश बरपा हुई, शासन और जनता एक दूसरे के खून के प्यासे और जान के दुश्मन हो गये, लोगों की इज़्ज़त व आबरू, जान व माल और ज़मीर और अख़लाक़ की सामान, और दीन व ईमान की दौलत, उच्च मानवीय मूल्य, और श्रेष्ट व्यवहारिक नियम, सब इस तबाही की ज़द में आ गये। जिस प्रकार कोई ज्वालामुखी पहाड़ के मुख पर कोई चीज़ हर समय खतरे में हो। और अन्देशा हो कि वो लावा जो इस "नहीं" की बदौलत बराबर पक रहा और बढ़ रहा है, किसी समय खुदा न ख़्वास्ता इसे बुरी तरह बर्बाद कर दे कि नस्लों और सदियों तक इसके बुरे असर जारी रहें, और फिर उसकी तलाफ़ी मुश्किल हो जाए।

ये इस मज़लूम इस्लाम की दर्द भरी कहानी है। जो हां और नहीं के बीच डोल रहा है। तुमने नहीं का अनुभव करके देख लिया, अब एक बार हां का भी अनुभव करके देख लो, और इससे पहले इस्लाम को कोई इल्ज़ाम न दो।

मुस्लिम न्याय पालन के शानदार नमूने

मौलाना मुहम्मद इज्तिबा नदवी

इस्लाम की नुमायां विशेषता अल्लाह की ज़मीन में न्याय स्थापित करना था। और जुल्म व जोर से इन्सानी बस्ती को पाक साफ़ करना और शांति अमन व प्रेम और भाईचारे का केन्द्र बनाना था। इसलिये कुरआन पाक और आप (स0अ0व0) की हदीसों में जगह जगह न्याय स्थापित करने और अपने और ग़ैरों के साथ न्याय करने का आदेश और ताकीद पायी जाती है। मिसाल के तौर पर कुछ आयतें दी गयी हैं।

पहली आयत है: "बेशक तुमको अल्लाह तआला इस बात का हुक्म देते हैं कि अधिकार वालों को उनके अधिकार पहुंचा दिया करो, और ये कि जब लोगों का जांच करो तो न्याय किया करो, बेशक अल्लाह तआला जिस बात की तुमको नसीहत करते हैं वो बात बहुत अच्छी है इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला खूब सुनते हैं, खूब देखते हैं।" (अलकुरआन)

दूसरी आयत है: "और जब बात किया करो तो इन्साफ़ रखा करो चाहे वो शख़्स रिश्तेदार ही हो।" (अलकुरआन)

तीसरी आयत है: "ऐ ईमान वालों! अल्लाह के लिये पूरी पाबन्दी करने वाले इन्साफ़ के साथ शहादत देने वाले रहो, और ख़ास लोगों की नफ़रत तुम्हारे लिये इसका कारण न हो जाए कि तुम न्याय न करो, न्याय किया करो कि वो तक़वे से ज़्यादा क़रीब है।" (अलकुरआन)

न्याय व इन्साफ़ में अपना भाई, और ग़ैर, दोस्त और दुश्मन, छोटा और बड़ा, मर्द और औरत, और बच्चा सब एक तरह और बराबर हैं। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने इन्साफ़ करने वाले इन्सान, हाकिम और जज को बड़े बुलन्द शब्दों में याद किया है, क़यामत के दिन जब सूरज सवा नेज़ा पर आ जाएगा और लोग धूप और तपिश से बिलबिलाते फिर रहे होंगे और केवल सात प्रकार के मनुष्यों को खुदा का साया हासिल होगा उनमे इन्साफ़ करने वाला व्यक्ति भी शामिल होगा।

आइये इस रोशनी में मुसलमान की ज़िन्दगी के कुछ इबरतनाक वाक़्ये भी सुनते चलिये! हुजूर अकरम (स0अ0व0) मदीना हिजरत कर चुके हैं। मदीना मुनव्वरा पर इस्लाम का साया फैल चुका है। अल्लाह के हुक्म इन्सान की रगों में पेवस्त हो रहे हैं। इबादत गुज़ारी का शौक़ व ज़ौक़ है। अगर भूल चूक से कोई गुनाह हो जाता तो खुद ब खुद सज़ा के लिये नबी (स0अ0व0) के दरबार में हाज़िर होकर कफ़्फ़ारा की मांग कर लेते हैं। मगर इसी बीच में एक ऐसा वाक़्या पेश आता है जो रहती दुनिया तक के लिये रोशनी का मीनार और इन्साफ़ का श्रेष्ठ उदाहरण साबित होता है। क़बीला–ए–कुरैश के एक आला ख़ानदान बनू मख़ज़ूम की एक औरत चोरी की करती है और मौक़े पर पकड़ ली जाती है। उन्हे सज़ा के लिये पेश कर दिया जाता है। कुरैश को सख़्त सदमे और ज़िल्लत का एहसास होता है। कुरैश किसी तरह इस औरत को सज़ा से बचाना चाहते हैं, मगर रसूलुल्लाह (स0अ0व0) से सिफ़ारिश कौन करे। एकदम से उन्हे ख्याल आता है कि हज़रत उसामा बिन ज़ैद हूजुर अकरम (स0अ0व0) को बहुत अज़ीज़ और प्यारे हैं अगर वो इस सिलसिले में बात करेंगे तो उनकी सिफ़ारिश कुबूल करने के क़ाबिल होगी। हज़रत उसामा कुरैश के कहने से हुजूर अकरम (स0अ0व0) की ख़िदमत में सिफ़ारिश लेकर हाज़िर हुए, हुजूर अकरम (स0अ0व0) का चेहरा मुबारक गुस्से से सुर्ख हो गया, फ़रमाया:

"उसामा तुम अल्लाह तआला की मुकरर सज़ा के बारे में सिफ़ारिश करने आये हो?" इसके बाद मेम्बर पर गये और फ़रमाया:

"तुमसे पहले के लोग इसलिये हलाक हो गये कि अगर उनका कोई सम्मानित व्यक्ति चोरी करता तो उसे छोड़ देते और अगर कमज़ोर व कमतर आदमी चोरी करता तो उसे सज़ा देते, खुदा की क़सम अगर फ़ात्मा बिन्त मुहम्मद (स0अ0व0) चुराती तो मैं उसका हाथ काटने का हुक्म देता।"

न्याय का अटल व बेलाग फैसला है, जो उम्मते मुस्लिमा की हमेशा रहनुमाई करता रहेगा। (शेष पेज 20 पर)

आजादी के बाद

मुफ्ती महफूज रहमान उस्मानी

अंतिम संदेश का मोहम्मद सल्लल्लाहो वाले वसल्लम का कथन है: "वह समय निकट आता है जब तमाम काफिर को में तुम्हें मिटाने के लिए मिलकर षड्यंत्र करेंगी और एक दूसरे को इस तरह बुलाएंगे जैसे जैसे भोज में स्वादिष्ट पकवानों की ओर एक दूसरे को बुलाते हैं। किसी ने पूछारू अल्लाह के रसूल! क्या हमारी कम संख्या के कारण से हमारे यह हाल होगा? कहा नहीं, बल्कि तुम उस समय संख्या में बहुत होगे, यद्यपि तुम समंदर की आग की तरह नकारा होगे। निसंदेह अल्लाह ताला तुम्हारे दुश्मनों के दिल से तुम्हारा डरो दबदबा निकाल देंगे और तुम्हारे दिलों में बुजदिल ही डाल देंगे किसी ने पूछा अल्लाह के रसूल बिजली का क्या अर्थ है बताया दुनिया की मोहब्बत और मौत से नफरत।"

इस समय दुनिया भर में मुसलमान का विलय रहेम हालत में जीवन बसर करने पर मजबूर हैं। प्यारे देश भारत समेत जहां भी मुसलमान हैं चाहे वे अल्पसंख्यक या बहुसंख्यक किसी ना किसी बहाने से उन पर अत्याचार के पहाड़ तोड़े जा रहे हैं अब हालत यह है कि मुसलमान जिस अदर जुल्म की चक्की में पिस रहे हैं शायद ही किसी दूसरी ओम पर कभी ऐसा समय आया हो?

इस्लाम के दुश्मन व विरोधी यहूदी व नसरानी और कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन एकत्र होकर मुसलमानों के खिलाफ षड्यंत्र कर रहे हैं है रतवा आश्चर्य की बात यह है कि हम सब कुछ जानते हुए भी उनके षड्यंत्र का शिकार बनते जा रहे हैं अगर हम आज भी एक हो जाएं धर्म को मसलक पर वरीयता दें और अल्लाह के कलमे के आधार पर एक झंडे के नीचे जमा हो जाए तो कोई भी साजिश और इस्लाम विरोधी मंसूबे कदापि सफल नहीं होंगे। यह बात भी ध्यान में रखने योग्य है कि अल्लाह ताला की मदद भी उसी सूरत में प्राप्त होगी जब हमारी जिंदगी दिन और शरीयत के अनुसार व्यतीत हो रही होगी धर्म तथा दिन से दूर और अलग रहते हुए अल्लाह की मदद की उम्मीद रखना बेकार है। मुसलमानों के लिए अल्लाह ताला की मदद का वादा जरूर है लेकिन साथ ही अल्लाह के मदद आने के लिए यह शर्त भी है कि: अगर तुम अल्लाह के दीन की मदद करोगे तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेंगे और तुम्हारे कदमों को जमा देंगे।

जब से मुसलमानों ने अल्लाह ताला के दीन की मदद छोड़ दी है अल्लाह ताला ने भी मुसलमानों से अपनी रहमत तथा मदद का हाथ उठा लिया है अतः आज हर और मुसलमानों पर यहूदियों तथा नस रानियों का हमला है आवश्यकता इस बात की है कि हम अल्लाह की रस्सी को मजबूती से थाम ले तथा एकत्र होकर सुनहरे उसूलों के तहत अपने जीवन व्यतीत करें तो अल्लाह ने चाहा तो सफलता यकीनी है।

हजरत अमीर दास असलम से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया नेक लोग एक के बाद एक जाते जाएंगे जैसे छटाई के बाद रद्दी या जो खजूरे बाकी रह जाती हैं ऐसे नाकारा लोग रह जाएंगे अल्लाह ताला उनकी कोई परवाह नहीं करेगा। इस समय भारतीय मुसलमानों को अत्यधिक मुश्किलों का सामना है छोटे से लेकर बड़े पदों पर बैठे हुए हुकूमत तथा प्रशासन के लोगों में संगीत सोच तेजी से परवान चल रही है यही कारण है कि मर्ज बढ़ता गया ज्यों–ज्यों दवा की।

मुस्लिम नेता व संस्थाएं इस अवसर पर सर जोड़कर बैठे और बुद्धिजीवियों इत्तेफाक को दूरन्देशी का मिल्ली सबूत देते हुए मुसलमानों के समस्याओं पर गंभीरता से सोच विचार नहीं बल्कि बाइज्जत कौन जो आज जिल्लत वापस थी और जुल्मों जबर इन्हें तात का शिकार है उनको आर्म गलत से निकालकर अमन व पद की राह पर चलाने के लिए मजबूत कार्यप्रणाली तैयार करें मिला तकरीर मसलक कलमा वाहिद की बुनियाद पर मुसलमानों को भी प्लेटफार्म पर जमा हो और मिल्लत के जुमला मसालों परेशानियों का हल तलाश करके इस्लाम के पैरों में अनुवाद ही काम करें और इस की रोशनी में हिंदुस्तान की तहजीब रीवा का पति देव आपकी आभारी करें कितनी बर्बादी मुकद्दर में थी आबादी के बाद क्या बताएं हम तो क्या गुजरी है आजादी के बाद।

हर व्यक्ति मिल्लत के मुक़द्दर के सितारा है

मोहम्मद रफ़ी उमरी किलोरी

शिक्षा के संदर्भ से मार्च के महीने को बड़ा महत्व प्राप्त है। साधारणतयः इसी महीने में मैट्रिक तथा इण्टरमीडिएट की वार्षिक परीक्षाएं होती हैं। पिछले कुछ सालों से यह महीना छात्रों के स्वास्थ्य व सलामती को लेकर सुर्ख़ियों में है कि इसी में शैक्षिक समस्याओं को लेकर छात्रों की बड़ी संख्या मानसिक तनाव का शिकार हो जाती है तथा धीरे–धीरे आत्महत्या की राह पर चल पड़ती है। वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाइज़ेशन की ओर से अगस्त 2018 में जारी रिपोर्ट के अनुसार 15 से 29 साले के छात्रों के में मौत का दूसरा बड़ा कारण आत्महत्या है।

अफ़सोस की बात यह है कि हमारे देश में कम उम्र के छात्रों में आत्महत्या का रूझान तेज़ी से बढ़ रहा है। रिपोर्टों से मालूम होता है कि छात्रों तथा नवयुवकों में आत्महत्या की ऊंची दर रखने वाले देशों में भारत भी एक है। अतः देश में छात्रों की आत्महत्या की घटनाएं 2014 में 8069, 2015 में 8934 और में 2016 में 9474 रिकार्ड किये गए, 2018 में तो यह संख्या 10159 तक पहुंच गई। नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो (एन सी आर बी) के अनुसार यह देश में सामूहिक आत्महत्या का आठ प्रतिशत है। शैक्षिक स्तर पर प्रगतिशील राज्योंः केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक तथा महाराष्ट्र में यह अनुपात सबसे अधिक पाया गया है, जो देश भर में छात्रों की सामूहिक आत्महत्या का 57.2 प्रतिशत है।

शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि आत्महत्या के द्वारा अपने जीवन का समापन कर लेने वाला छात्र यद्यपि एक होता है, लेकिन उसे मौत के मुंह में ढकेलने वाले कई एक हैं। आत्महत्या करने वाले हर छात्र के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है। साधारणतयः यह माता–पिता, अभिभावक, शिक्षक, शिक्षण संस्थानों का प्रबन्धन या फिर समाज के किसी व्यक्ति की शक्ल में छिपा हुआ होता है। मानसिक रोग विशेषज्ञों का कहना है कि आत्महत्या की घटना अचानक से नहीं होती बल्कि यह मानसिक दबाव की चरम सीमा है। उन्होंने इसके लिए जिन कारणों को चिन्हित किया है उनमें उज्जवल भविष्य के नाम पर माता–पिता तथा स्कूल प्रशासन की ओर से लादा गया शिक्षा को बोझ, छात्रों के स्वाभाविक रूझान तथा इच्छा के विपरीत उन्हें दूसरी डगर पर ले जाने का प्रयास, शैक्षिक समस्याओं में संतुलन तथा प्रोत्साहन के बजाय उनका हतोत्साहन, किसी ग़लती या कमज़ोरी पर उलाहना देना तथा कष्ट पहुंचाना, माता–पिता तथा शिक्षक की ओर से छात्रों के बीच की जाने वाली नकारात्मक तुलना, उनके मान–सम्मान से खिलवाड़ तथा उनमें एहसासे कमतरी तथा परीक्षा में असफलता का भय अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

मुस्लिम समाज में तो यह कारण इस प्रकार प्रचलित हैं कि उनकी गंभीरता का एहसास तो दूर की बात, उनका इदराक भी कम ही पाया जाता है। वह तो अल्लाह का एहसान है कि इस्लाम की बरकत से मुस्लिम छात्रों में आत्महत्या का रूझान नहीं के बराबर है, मगर इन कारणों के कारण ''ड्राप आउट'' की स्थिति में मुस्लिम छात्रों का व्यक्तित्व तथा उनके भविष्य की जो हत्या की जा रही है, उसकी ओर ध्यान बहुत कम दिया जा रहा है।

यह पीड़ा संसारिक शिक्षण संस्थाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि मदरसों का भी कमोबेश यही हाल है। इस भौतिकवादी समय में भी हर साल सैंकड़ों छात्र अल्हम्दुलिल्लाह मदरसों में आते हैं। जिन कक्षाओं में चालिस–पचास छात्र प्रवेश लेते हैं, फ़राग़त के अवसर पर जाएज़ा लिया जाए तो उनकी संख्या

तीस–चालिस प्रतिशत से अधिक नहीं रहती। इस प्रकार साठ–सत्तर प्रतिशत छात्र ''ड्राप आउट'' हो जाते हैं। देखा यह जाता है कि मदरसों से निकल जाने के बाद उनमें से अधिकांश नकारात्मक प्रतिक्रिया का शिकार हो जाते हैं, जिसके कारण से न वे दीन के रहते हैं, न दुनिया के, बल्कि माता–पिता तथा समाज के लिए सर का दर्द बन जाते हैं। यदि यह एक साल तक पढ़ने के बाद पढ़ाई छोड़ देता है तथा व्यवहारिक जीवन में इसकी शिक्षा–प्रशिक्षण का कोई फ़ायदा नहीं उठाता तो ध्यान दिया जाना चाहिये कि उस पर क़ौम का जो पैसा ख़र्च हुआ है, संस्था की ओर से जो मेहनत हुई तथा शिक्षक ने जो एक साल तक दिमाग़ ख़पाया उसका क्या लाभ हुआ?

समस्या छात्रों की आत्महत्या की हो या ड्राप आउट की, जानबूझ कर या अनजाने में जो भी कारण इसके पीछे बन रहे हों, उन्हें ठंडे दिमाग़ से सोचना चाहिये, बच्चों की शिक्षा के साथ–साथ उनका मानसिक तथा धार्मिक प्रशिक्षण की ओर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि उनमें ईमान और यक़ीन के साथ–साथ आख़िरत (परलोक) में जवाबदेही का भाव पुख़्ता हो तथा वह जीवन के उतार–चढ़ाव तथा सर्द–गर्म हालात का मुक़ाबला हिम्मत तथा हौसले से कर सकें। बचपन ही से उनके दिल व दिमाग़ में यह बात बिठाई जाए कि वे देश व क़ौम का क़ीमती सरमाया हैं।

अफ़राद के हाथों में है अक़वाम की तक़दीर।
हर फ़र्द है मिल्लत के मुक़द्दर का सितारा।।

शेषः मुस्लिम न्याय पालन के शानदार नमूने

अमीरुल मोमीनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि0) की ख़िलाफ़त का दौर है। फ़ौज और इन्तिज़ामिया की व्यवस्था हो रही है। हर हर कदम पर भाईचारा, बराबरी, और इन्साफ़ मद्देनज़र है। कोई अधिपत्य, कोई भेदभाव, नहीं है। लेखक बयान करता है कि अमीरूलमोमीनीन के एक साहबज़ादे नशे की हालत में पाये जाते हैं। धीरे–धीरे ख़बर उनको पहुंचती है। हुक्म होता है कि साहबज़ादे को हाज़िर किया जाए, खोज से ख़बर सही साबित होती है। कोड़े लगाने का हुक्म दिया जाता है। साहबज़ादे बीमार हैं, लोग सिफ़ारिश करते हैं कि सेहतमन्द होने तक सज़ा टाल दी जाए। हज़रत उमर फ़ारूक़ फ़रमाते हैं कि ये नामुमकिन है, और आदेश का पालन हो जाता है। और कुछ समय बाद शायद कोड़ो के असर से वो खुदा को प्यारे हो जाते हैं।

इन्साफ़ परवरी का एक वाक़्या और ख़िदमत में पेश है। अमीरुलमोमीनीन हज़रत अली (रज़ि0) की ख़िलाफ़त का दौर है हज़रत अली प्रजा के हाल लेने के लिये गश्त कर रहें हैं। अचानक उनकी नज़र एक ईसाई पर पड़ती है। उसके पास अपनी ज़िरह नज़र आती है वो उसको लेकर शहर के क़ाज़ी के पास जाते हैं और वो एक आम आदमी की तरह उसके ख़िलाफ़ मुक़दमा पेश करते हैं कि ये ज़िरह मेरी है और मैने इसे बेचा है और न ही हदिया की है। शहर के क़ाज़ी ने ईसाई से पूछा कि क्या अमीरुलमोमीनीन जो कुछ कह रहे हैं उसमें तुम्हे कुछ कहना है। ईसाई ने कहा कि ज़िरह तो यक़ीनन मेरी है, मगर अमीरुलमोमीनीन मेरे नज़दीक छोटे आदमी नहीं है, शुरैह ने हज़रत अली (रज़ि0) से मुख़ातब होकर पूछा कि मेरे अमीरुलमोमीनीन कोई सबूत है? हज़रत अली (रज़ि0) हंस दिये, और फ़रमायाः शुरैह ने ठीक कहा, मेरे पास कोई सुबूत तो है नहीं इसलिये क़ाज़ी शुरैह ने फ़ैसला सुनाया कि ज़िरह ईसाई को दे दी जाए ईसाई उसे लेकर जाने लगा और अमीरुलमोमीनीन उसे देखते रहे कुछ दूर जाकर वो वापस आया और दर्द भरी आवाज़ में कहा किः मैं गवाही देता हूं कि ये अम्बिया के हुक्म हैं। अमीरुलमोमीनीन मुझे अपने क़ाजी के सामने पेश करते हैं और वो मेरे ख़िलाफ़ फैसला देता है। अमीरुल मोमीनीन! खुदा की क़सम ये ज़िरह आपकी है जब आपने सफ़ीन की तरफ़ कूच किया तो मैं लश्कर के पीछे हो लिया ये ज़िरह आपके बादामी रंग वाले ऊंट पर से निकली हज़रत अली (रज़ि0) ने फ़रमाया कि जब तुम ईमान ले आये तो अब ये तुम्हारी है।

मुसलमान वैज्ञानिकों के कुछ अविष्कार

डाक्टर हफ़ीज़ुर्रहमान सिद्दीक़ी

विज्ञान के कुछ अविष्कार क्या, विज्ञान ही मुसलमानों की खोज है। क्या मुसलमानों से पहले विज्ञान थी? और क्यों होती? विज्ञान तो अनुभव करने से अस्तित्व में आता है और मुसलमानों से पहले अनुभव करने का कब रिवाज था? मुसलमानों से पहले इल्म पर यूनानियों का क़ब्ज़ा ज़रूर था मगर अविष्कार करने के लिये वो अनुभव नहीं करते थे बल्कि अक़्ल के घोड़े दौड़ाते थे। इसे मन्तिक़ या फ़लसफ़ा कहा जाता था, विज्ञान नहीं। जैसे अरस्तू की खोज कि भारी गोला जल्द गिरता है और हल्का गोला देर में, अनुभव पर आधारित नहीं था बल्कि मनतिक़ पर आधारित था। गैलिलियो ने जब अनुभव किया तो खोज ग़लत निकली। अरस्तू और उस जैसे यूनानी हकीम के विपरीत अपनी कोई भी खोज प्रस्तुत करने से पहले अनुभव की कसौटी पर परखते थे। इसी कारण अनुभव करना मुसलमान वैज्ञानिकों की पहचान बन गयी थी और सदियों तक उनकी पहचान बनी रही। इसी कारण कोई और अनुभव करता तो देखने वाले शक करते कि ये भी मुसलमान हो गया है। यूरोप के ईसाई छात्रों ने मुस्लिम स्पेन के मुस्लिम वैज्ञानिकों से जब विज्ञान सीखा और इसी काम को अपनाया तो उनके धर्म वाले उनपर इसी तरह का शक करने लगे थे।

अनुभवी तरीक़े को अपना कर मुसलमानों ने नित नयी खोजों के ढेर लगा दिये। वक़्त बीतने के साथ मुसलमान वैज्ञानिकों की अधिकतर किताबों का भन्डार विलुप्त हो गया और जितना कुछ बच रहा है उन्हे पढ़ने और समझने वाले ज़्यादा नहीं रहे। इसीलिये उनकी खोजो की तफ़सील सामने नहीं आयी। मगर फिर भी कुछ न कुछ खोजों की तफ़सील मिल जाती है। उनसे अन्दाज़ा होता है कि मुसलमानों ने साइंस के साथ अपना संबंध अपने शुरूआती दौर ही मे कर लिया था। सबसे पहले मुसलमान वैज्ञानिक का नाम ख़ालिद था। वो हज़रत अमीर माविया रज़ि0 के पोते थे। इससे आप अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि मुसलमान पहली सदी हिजरी में ही विज्ञान की ओर आकर्षित हो गये थे। उन्होने रसायन में एक ज़बरदस्त खोज भी की और उससे मुसलमानों के बहरी बेड़े को दुश्मनों के ख़िलाफ़ बहुत अधिक सुरक्षा मिली। वो खोज ये थी कि उन्होने आतिशे यूनान (Greek Fire) का तोड़ खोज लिया था। आतिशे यूनान एक प्रकार का तेल था जिसमें एक रसायनिक मसाला मिला हुआ था जो आग को भड़काने (Combustible) वाला था। इसकी पिचकारी मारते ही आग भड़क उठती थी जो आस–पास की चीज़ को जलाकर ख़ाक़ कर देती थी। रोम की सल्तनत के ईसाई इसे मुसलमानों के बहरी बेड़े के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करते। उनके जहाज़ों पर उसकी पिचकारी मारते ही जहाज़ों में आग भड़क उठती थी। मुसलमान इस आफ़त से बहुत आजिज़ थे। ख़ालिद ने इस तेल के विशेष तत्व ज्ञात कर लिये और फिर खुद अपना आग भड़काने वाले तेल का अविष्कार किया। फिर क्या था मुसलमानों के बहरी बेड़े उन्ही रोमियों के ख़िलाफ़ काम में आने लगे। इसके बाद से रोमियों का ये हाल हो गया कि वो अपने बहरी जहाज़ों को मुसलमानों से छिपाये फिरते थे। उस वक़्त मुसलमानों को विज्ञान में जो अधिपत्य प्राप्त हुआ वो लगभग छः–सात सदियों तक हासिल रहा। इस दौरान कोई दूसरी क़ौम साइंस में उनका मुक़ाबला न कर सकी, क्योंकि पश्चिम पर जिहालत का अंधेरा छाया हुआ था और पूरब का हाल भी लगभग उनके जितना ही ख़राब था।

मुस्लिम वैज्ञानिक नित नयी खोज करते–करते इतना आगे निकल गये थे कि पत्थर को सोना बनाने की सोचने लगे थे। मानो इसमे उन्हे कामयाबी न हुई और न ऐसी कामयाबी आज के ज़माने में मुमकिन हो सकी मगर इस सिम्त में दूसरी सफ़लतांए ज़रूर हाथ लगीं। एक ये कि सोने को गलाने का एक ऐसा नुस्ख़ा खोजा गया जिसके ज़रिये सोने के डले को बहुत आसानी से गलाया जाने लगा। वो नुस्ख़ा जाबिर इब्ने हयान (737–812ई0) ने खोजा था। वो ये कि शोरे के तेज़ाब नाइट्रिक एसिड और नमक के तेज़ाब, हाइड्रोक्लोरिक एसिड को मिलाकर एक रसायन तैयार किया। इस रसायन में सोने का ढ़ेला डालते ही वो पिघल जाता। इस रसायन को ज़बरदस्त विशेषताओं के आधार पर माएल मुलूक (Aquaregia) कहा जाने लगा यानि पानी का बादशाह।

हाइड्रोक्लोरिक एसिड और नाइट्रोक्लोरिक एसिड भी जाबिर हयान ने ही खोजा था। उसने कन्धक का तेज़ाब (सलफ़्यूरिक एसिड) भी खोजा था। ये तीनों तेज़ाब, मअदनी तेज़ाब कहलाते हैं। जाबिर से पहले दुनिया मादअनी तेज़ाबों को नहीं जानती थी सिर्फ़ बनाती तेज़ाबों को लोग जानते थे। लेमू का तेज़ाब, सड़क एसिड और इमली का तेज़ाब, नारट्रेक एसिड वग़ैरह।

जाबिर की ईजाद की लिस्ट बहुत लम्बी है। उसने लोहे के रंग को गंदगी से बचाए रखने के लिये एक मसाला तैयार किया था। चमड़े को रंगने के लिये एक पाउडर तैयार किया था। कपड़े को वाटरप्रूफ़ करने के लिये एक वार्निश बनाया था। उसने सोने के पानी की स्याही भी बनायी थी, जिससे श्रेष्ठ किताबें जैसे कुरआन मजीद इत्यादि लिखी जाती थीं। सोने के साथ उसके इस नूअ के शगुफ़ का एक बहुत ठोस सबूत अभी हाल ही में एक खुदाई के ज़रिये भी पाया गया है। बग़दाद में बाबे दमिश्क़ के निकट एक खुदाई में इसकी प्रयोगशाला मिली है जिसमें खरल और सोने का टुकड़ा भी मिला है।

इन अविष्कारों के साथ साथ जाबिर की ये विशेषता भी है कि विज्ञान के इस शुरूआती दौर में भी वो रसायनिक तत्वों के बीच पैदा होने वाली रसायनिक क्रियाओं के विभिन्न प्रकारों के अन्दरूनी तकलीं (Calcination) क़लमाओ (Crytalization) गिराख़्त (Fusion) और तख़फ़ीफ़ (Reduction) के अन्तर को समझता और जानता था। जाबिर ने बहुत सी किताबें भी लिखीं, जिन में से एक किताब "किताबुल मवाज़ीन" बहुत मशहूर हुई और यूरोप में "The Book of Balance" के नाम से अनुवाद होकर प्रकाशित हुई। इस कारण यूरोप वालों को भी इसकी खूब जानकारी थी। अमरीका की प्रसिद्ध यूनिवर्सटी मेसाच्यूस्टस इन्सटीट्यूट आफ़ टैक्नालॉजी की रसायन विभाग की इमारत की एक दीवार पर इतिहास के दस श्रेष्ठ रसायन दाताओं के नाम लिखे गये हैं। उनमें जाबिर इब्ने हयाम के नाम भी शामिल हैं।

इसी तरह से यूनीवर्सटी की चिकित्सा विभाग की दीवार पर दस श्रेष्ठ चिकित्सकों के नाम लिखे हैं जिसमें एक मुस्लिम वैज्ञानिक इब्नुल हैशम का नाम भी है। इब्नुल हैशम (965–1039 ई0) के कारनामें भी कोई शक नहीं कि न समाप्त होने वाले हैं। तिब्बीयाते नूर में कानूनुल नअक़ास (Law of reflection) और कानूनुल नअताफ़ (Low of refraction) इसी के अविषकर हैं। उसने भी विज्ञान के अविष्कारों के लिये अनुभव करना और अनुभव करके वास्तविकता का पता लगाना अपना उसूल बना रखा था। प्रकार पर शोध करने लिये उसने अन्धेरा कमरा बना रखा था तब से आज तक रोशनी पर प्रयोग अन्धेरे कमरे (Dark Room) में किये जाते हैं।

इब्नुल हैशम की खोजों में से कुछ निम्नलिखित हैं: उसने अपनी प्रयोग शाला में प्रयोग करके बताया कि किसी हमवार अपारदर्शी सतह पर रोशनी की तिरछी किरन और उससे उत्पन्न हाने वाली किरनें (Reflected Rays) इस बिन्दु पर उमूदी लकीर के दोनों पहलुओं पर बराबर के ज़ाविये बनांएगीं।

फिर उसने इसका भी अविष्कार किया कि रोशनी की लकीर हमेशा ख़ते मुस्तक़ीम पर सफ़र करती है। इब्नुल हैशम ने ही ये भी मालूम किया कि रोशनी आवाज़ की लहरों के मुक़ाबले में ज़्यादा रफ़्तार वाली होती है। (शेष पेज 25 पर)

परिवार नियोजन

मौलाना ज़फ़र अहमद क़ासमी

अल्लाह तआला ने इस दुनिया को पैदा किया। इसमें भांति–भांति के प्राणियों, वनस्पतियों व जानवरों को रखकर इसे बसाया और आबाद किया। वही इस दुनिया का मालिक, ख़ालिक़ व राज़िक़ है। दुनिया की हर चीज़ उसके अधीन है। सूरज, चांद, सितारे उसी के हुक्म से निकलते और डूबते हैं, हवांए उसके हुक्म से चलती हैं, आसमान से बारिश की एक बूंद उसके हुक्म के बग़ैर नाज़िल नहीं होती, इसी तरह इन्सानों का मरना और जीना उसी के आदेशानुसार है। इन्सान इस दुनिया में न अपनी मर्ज़ी से आता है और न अपनी मर्ज़ी से जाता है। मौत व ज़िन्दगी सब अल्लाह के अधीन है।

जब ये बात मालूम है कि दुनिया की व्यवस्था सृष्टि के सृष्टा के हाथों में है, वही उसका मालिक है और वही सबको रोज़ी देता है, उसी के पास हर चीज़ का ख़ज़ाना है, वो अपने ज्ञान के अनुसार जितना चाहता है अवतरित करता है। अल्लाह तआला का इरशाद हैः "और कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके ख़ज़ाने हमारे पास मौजूद न हों और हम उनमें से एक विशेष मात्रा ही नाज़िल करते हैं।" (अलकुरआन)

दुनिया में इन्सानों की आबादी, उनकी संख्यां कब, कितनी और कहां होनी चाहिये, ये भी अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे ले रखा है। उसमें नस्ल कुशी के द्वारा दखलअन्दाज़ी करना, प्राकृतिक व्यवस्था में दखलअन्दाज़ी और उसमें ख़राबी पैदा करना यही परिवार नियोजन और बर्थ कन्ट्रोल (ठपतजी ब्वदजतवस) है। जो न शरीअत के अनुसार ठीक है, न अक़्ल के अनुसार और न ही अनुभव व एतिहासिक रूप से ठीक है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के साथ जिहाद में शरीक हुए और जवान होने की बुनियाद पर जिन्सी ख़्वाहिश हमें एकाग्रचित नहीं होने देती तो हमने रसूलुल्लाह (स0अ0व0) से ख़स्सी होने की आज्ञा मांगी ताकि मर्दान्गी ख़त्म होने के बाद एकाग्र होकर व दिल लगाकर जिहाद में शरीक हों। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने हमको ऐसा करने से मना कर दिया और इसकी हुरमत बयान करने के लिये कुरआन करीम की आयत तिलावत फ़रमायीः

"ऐ ईमान वालों! तुम अल्लाह की उन पाकीज़ा चीज़ों को अपने लिये हराम मत करो जो उसने तुम्हारे लिये हलाल की हैं, और हद से आगे न बढ़ो, क्योंकि अल्लाह हद से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता।"

इसी तरह अबूहुरैरा रज़ि0 ने अपने ज़ाति हालात के मद्देनज़र रसूलुल्लाह (स0अ0व0) से ख़स्सी होने की इजाज़त मांगी ताकि लैंगिक इच्छाओं की परेशानियों से दूर हो जायें और गुनाह में पड़ने का ख़तरा न रहे तो आप (स0अ0व0) ने उन्हें सख़्ती से मना कर दिया।

ऐसे ही नस्ल का ख़ात्मा करने के लिये कोई भी ऐसा तरीक़ा अपनाना जिससे गर्भ न ठहरे, ये भी नापसंदीदा है, रिसालत के युग में गर्भ न ठहरने के लिये एक उपाय था कि मर्द सम्भोग तो करे मगर अपनी मनी को बाहर गिरा दे ताकि मनी भ्रूण में जाकर गर्भ ठहरने का कारण न बन सके। इस तरीक़े के बारे में सहाबा किराम रज़ि0 ने रसूलुल्लाह (स0अ0व0) से पूछा तो आप (स0अ0व0) ने फ़रमाया, "अगर तुम ऐसा न करो तो इसमें तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं, क्योंकि जो जान क़यामत तक पैदा होने वाली है वो तो पैदा होकर रहेगी।"

मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है एक व्यक्ति ने रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के दरबार मे आकर अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (स0अ0व0) मेरी एक लौन्डी है जो घर का काम करती है, मैं उसके साथ संबंध स्थापित करता हूं मगर मैं चाहता हूं कि वो

गर्भवती न हो तो क्या में अज़्ल कर लूं? आप (स0अ0व0) ने फ़रमाया, "अगर तुम्हारा दिल यही चाहता है तो अज़्ल कर लो, मगर ये जान लो जो बच्चा इसके पेट से पैदा होना अल्लाह की कुदरत की ओर से लिखा जा चुका है वो ज़रूर हो कर रहेगा।" अख़बारों में आये दिन हमारी नज़रों से ऐसी ख़बरें गुज़रती हैं कि फ़लां जगह नसबन्दी के बावजूद बच्चा पैदा हुआ, फ़लां औरत नसबन्दी कराने के बाद भी गर्भवती हो गयी, इससे अल्लाह की कुदरत और उसकी बड़ाई ज़ाहिर होती है कि वो जिसको पैदा करना चाहता है उसको कोई रोक नहीं सकता, इसलिये परिवार नियोजन के मसले को उसी पर छोड़ देना चाहिये वो हमारे लिये जो मुनासिब व बेहतर होगा करेगा। वही ग़ैब का जानने वाला है।

परिवार नियोजन और नस्ल कुशी अक़्ली एतबार से भी दुरूस्त और सही नहीं है कि इस दुनिया में इन्सानों के आने–जाने का सिलसिला क़ायम और जारी है तो जब हमको जाने वालों यानि मरने वालों की मात्रा पर नियन्त्रण नहीं है कि इस साल इतने मरेंगे, इससे ज़्यादा नहीं तो आने वालों की संख्यां पर नियन्त्रण लगाना यानि बर्थ कन्ट्रोल का तरीक़ा अपनाना कहां की अक़्लमन्दी है। ऐसा करने से दुनिया की व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो जायेगी इसलिये इस काम को अलीम व ख़बीर, हकीम व लतीफ़ परवरदिगार पर छोड़ देना चाहिये। उसकी व्यवस्था में दख़लअन्दाज़ी किसी भी प्रकार से सही और ठीक नहीं। केवल इस ख़तरे से कि आने वाले क्या खायेंगे, नस्ल कुशी के लिये आन्दोलन करना, और उस पर नियन्त्रण प्राप्त करने के लिये रूपया ख़र्च करना किसी भी प्रकार से ठीक नहीं। जब आबादी ज़्यादा होगी तो रिज़्क़ के कारण व साधन भी अधिक पैदा होंगे। अनुभव गवाह हैं कि जिस प्रकार लोगों की आबादी बढ़ी है, पैदावार भी उसी तरह बढ़ी है बल्कि उससे ज़्यादा हुई है। हमारे हिन्दुस्तान में आज़ादी के पचास साल पूरे होने पर एक शोध हुआ था जिसमें बताया गया था कि आज़ादी के बाद हिन्दुस्तान की आज़ादी दोगुना बढ़ी है और ग़ल्ले की पैदावार चार गुना बढ़ी है।

मुझे हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल्लाह साहब फूलपुरी साहब की एक बात बहुत अच्छी लगी जो फ़ैज़ान–ए–अशरफ़ के एक अंक में पढ़ने को मिली, उन्होंने कहा कि क्या पैदा होने वाला बच्चा सिर्फ़ पेट लेकर पैदा होता है जो हम चिल्ला रहे हैं कि वो कहां से खायेगा और वो क्या खायेगा, बल्कि हर पैदा होने वाला बच्चा एक पेट के साथ दो हाथ, दो पैर और दिल व दिमाग़ भी लेकर आता है। वह उसी के ज़रिये कमाएगा और खाएगा, अल्लाह तआला सबका ख़ालिक़ है और वही सबका राज़िक़ है।

इस ज़मीन को अल्लाह तआला ने ज़िन्दा और मुर्दा दोनों के लिये पर्याप्त घोषित कर दिया है, अल्लाह तआला का इरशाद हैः "तो इस ज़मीन पर जैसे इन्सान बसते हैं उसी तरह बहुत से हैवानात भी रहते हैं जिनमें संतुलन के द्वारा उनकी नस्ल क़ायम है और उनके अन्दर नस्ल बढ़ाने की ऐसी ज़बरदस्त ताक़त है कि अगर उन्हें अगर अल्लाह तआला पूरी ताक़त से बढ़े तो एक छोटे से अर्से में ही एक नूअ की नस्ल से पूरी ज़मीन पट जायेगी कि दूसरे प्राणियों के लिये कोई जगह ही नहीं रहेगी।" मगर अल्लाह तआला उनको एक सीमित मात्रा जो दुनिया के लिये आवश्यक है से बढ़ने नहीं देता। देखिये स्टार मछली 20 करोड़ अन्डे देती है, अगर उसके एक व्यक्ति को नस्ल बढ़ाने का मौक़ा मिल जाये तो फिर उसकी तीन चार पुश्त तक दुनिया के तमाम समन्दर इस तरह पट जायेंगे कि उनमें एक क़तरा पानी की गुन्जाइश न रहेगी। मगर वो कौन है जो उनकी नस्ल को एक निश्चित सीमा से बढ़ने नहीं देता, बेशक वो अल्लाह तआला की हिकमत व ज्ञान है न कि हमारी वैज्ञानिक कोशिश। तो जिस तरह से अल्लाह तआला ने दुनिया के सभी प्राणियों की नस्लों में ऐसी बढ़ोत्तरी नहीं कि, जिससे ज़मीन तंग हो जाये, बिल्कुल उसी तरह उसकी हिकमत इन्सानी नस्ल पर भी हावी है, हमेशा से उसी की हिकमत के मुताबिक़ अमल होता रहा है और आगे भी होता रहेगा फिर हमें क्या ज़रूरत है कि कुदरत के इन कामों में दख़ल अन्दाज़ी करें और परिवार नियोजन जैसा बेकार काम करें। परिवार नियोजन से मर्द–औरत दोनों के जिस्म के अस्बी निज़ाम (सेक्सुअल ग्लैन्डस्) पर बुरे प्रभाव पड़ते हैं। मनुष्य के व्यस्क होने के समय जब इन ग्लैन्डस् का काम तेज़ हो जाता है तो जिस तरह मर्द–औरत में

औलाद पैदा करने की क्षमता विकसित होती है, इसी प्रकार उनमें ख़ूबसूरती, शाइस्तगी, दिमाग़ी ताक़त, जिस्मानी ताक़त और अमली सरगर्मियां भी पैदा होती हैं। अगर उन ग्रन्थियों के प्राकृतिक उद्देश्य को पूरा न किया जाये तो ये अपनी ज़िम्नी अमल यानि तक़वियत को भी छोड़ देंगे। जिससे दोनों सिनफ़ों में नामर्दी व कमज़ोरी पैदा हो जायेगी।

अल्लाह तआला ने मर्द–औरत के मिलाप में जो कशिश और सुकून रखा है उसकी मंशा यही है कि अपनी ख़्वाहिश को पूरा करने के साथ वो नस्ल बढ़ाने का सिलसिला भी जारी रखे जिसमें नस्ल इन्सानी बाक़ी रहे, अब अगर कोई व्यक्ति सुकून तो हासिल करता है मगर उस मक़सद को पूरा नहीं करता जिसके मुआवज़े में उसको ये सुकून प्राप्त हुआ है तो ऐसे व्यक्ति की मिसाल उस नौकर व ख़ादिम जैसी है जो तन्ख़्वाह पूरी–पूरी हासिल करता है मगर काम व ख़िदमत से कोताही बल्कि इनकार करता है। यक़ीनन ऐसा नौकर या ख़ादिम सज़ा योग्य है। इसी तरह वो इन्सान भी मुजरिम और सज़ा के लायक़ है जो लज़्ज़ते शबाब तो हासिल करता है मगर उसके मक़सद को पूरा नहीं करता जिसके बदले फ़ितरत ने ये सुकून दिया था। प्रकृति उस व्यक्ति को सज़ा दिये बग़ैर नहीं छोड़ सकती जो उसकी अवहेलना व ग़द्दारी पर आमादा हो। मेरे सामने कई ऐसे लोगों की मिसालें मौजूद हैं जिनको प्रकृति की इस अवहेलना व ग़द्दारी की सज़ा मिली है। एक औरत ने अपना गर्भ गिरा दिया कि अभी से क्या बच्चों का झंझट पाला जाये, अब बर्सों से वो गर्भवती होने की इच्छा करती है, मगर गर्भवती नहीं होती।

एक दूसरी औरत के दो या तीन लड़के थे, चौथे गर्भ को नष्ट कर दिया फिर उसके तीनों बच्चे एक–एक करके मर गये, अब वो गर्भ और बच्चे के लिये तरस रही है। मर्द–औरत दोनों सेहतमन्द होने के बावजूद औलाद जैसी नेमत से महरूम हैं। एक तीसरा वाक़्या भी सुन लीजिये, एक उच्च शिक्षा प्राप्त सरकारी कर्मचारी ने उन्नति की इच्छा में सिर्फ़ दो ही बच्चे एक लड़की और एक लड़के पर संतोष किया। लड़के को उच्च शिक्षा दिला रहा था कि एक सफ़र में जाते हुए ट्रेन की चपेट में आ गया और इन्तिक़ाल कर गया। मां की हालत पागलों से बदतर और बाप मुअरक़्क़ा इबरत बना हुआ। बिल्कुल सच है कि प्रकृति अपने मुजरिमों को कभी नहीं बख़्शती उससे बदला लेकर रहती है, अल्लाह की लाठी में आवाज़ नहीं होती है।

शेषः मुसलमान वैज्ञानिकों के कुछ अविष्कार

इब्नुल हैशम की ये सब खोजें दिलचस्प और लाभदायक तो थीं ही, उसकी एक खोज ऐसी थी जिसने सैंकड़ों साल पुरानी एक ग़लतफ़हमी दूर कर दी कि देखने के लिये रोशनी आंखों के अन्दर से निकलती है। उसने प्रयोग करके बताया कि रोशनी आंखों से नहीं निकलती बल्कि बाहर की रोशनी में आखों में दाख़िल होती है तब मनुष्य किसी चीज़ को देख पाता है।

उसके ऐसे शानदार अविष्कारों के कारण से उसे यूरोप में बाबाए बसीरात (जिम थ्ंजीमत व् व्जपबे) का लक़ब दिया गया। उसका महत्व यूरोप में आज भी है। इसका अन्दाज़ा इससे भी किया जा सकता है कि हाल ही में उसकी किताब "किताबुल मनाज़िर" जर्मनी की एक संस्था जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी ने प्रकाशित की है।

मुसलमानों में केवल यही दो मौजूदा वैज्ञानिक पैदा नहीं हुए और भी थे और हज़ारों में थे। एक सौ के लगभग की चर्चा यूरोपीय लेखक भी करते हैं। उनमें इब्ने सीना, रज़ाई, ज़हरावी, इब्ने नफ़ीस मिस्री, इब्ने बैतार, हाफ़िज़, दमीरी, ख़्वारज़मी, उमर ख़ैय्याम, अलबैरूनी और इदरीस इत्यादि ज़्यादा अहम हैं। मुसलमान वैज्ञानिकों की अधिक संख्या का अन्दाज़ा इससे कीजिए कि उनकी लिखी हुईं किताबों की संख्या लाखों में है। यूरोप वालों ने अपनी भाषा में इनके अनुवाद कराने के लिये अनुवाद कक्ष स्थापित करा रखे थे और सैंकड़ों साल तक अनुवाद कराते रहे थे। फिर भी सभी किताबों के अनुवाद न करा सके क्योंकि उनकी संख्या ही इतनी अधिक थी।

ये मुसलमान वैज्ञानिकों की किताबों का फ़ैज़ान था कि यूरोप में भी विज्ञान पहुंच गयी वरना जैसा कि अभी बताया गया वहां तो जिहालत का अंधेरा छाया हुआ था।

कुरआन करीम में भ्रूण के विकास के चरणों के बारे में वैज्ञानिक तथ्य

यमन के प्रसिद्ध ज्ञानी शेख अब्दुल मजीद अज–जन्दानी के नेतृत्व में मुसलमान स्कालरों के एक समूह ने भ्रूण विज्ञान (Embryology) और दूसरे वैज्ञानिक विषयों के बारे में पवित्र कुरआन और विश्वस्नीय हदीस ग्रंथों से जानकारियां इकट्ठी कीं और उनका अंग्रेजी में अनुवाद किया। फिर उन्होंने पवित्र कुरआन की एक सलाह पर काम किया।

"ऐ पैगम्बर! हमने तुमसे पहले भी जब कभी रसूल संदेशवाहक भेजे हैं आदमी ही भेजे हैं जिनकी तरफ हम अपने संदेश को वह्य किया करते थे, सारे चर्चा करने वालों से पूछ लो अगर तुम स्वयं नहीं जानते।"

(अल–कुरआन, सूरः 16 आयतः 43)

जब पवित्र कुरआन और प्रमाणिक हदीसों से भ्रूण विज्ञान के बारे में प्राप्त की गई जानकारी एकत्रित होकर अंग्रेजी में अनुवादित हुई तो उन्हें प्रोफेसर डा. कीथ मूर के सामने पेश किया गया। डा. कीथ मूर टोरॉन्टो विश्वविद्यालय कनाडा में शरीर रचना विज्ञान विभाग के संचालक और भ्रूण विज्ञान के प्रोफेसर हैं। आज कल वह प्रजनन विज्ञान के क्षेत्र में अधिकृत विज्ञान की हैसियत से विश्व विख्यात व्यक्ति हैं। उनसे कहा गया कि वह उनके समक्ष प्रस्तुत शोध–पत्र पर अपनी प्रतिक्रिया दें। गम्भीर अध्ययन के बाद डॉ. कीथ मूर ने कहा, "भ्रूण के संदर्भ से कुरआन की आयतों और हदीस के ग्रंथों में बयान की गई तकरीबन तमाम जानकारियां ठीक आधुनिक विज्ञान की खोजों के अनुकूल हैं। आधुनिक प्रजनन विज्ञान से उनकी भरपूर सहमति है और वह किसी भी तरह आधुनिक प्रजनन विज्ञान से असहमत नहीं हैं। उन्होंने आगे बताया कि अलबत्ता कुछ आयतें ऐसी भी हैं जिनकी वैज्ञानिक विश्वस्नीयता के बारे में वह कुछ नहीं कह सकते। वह यह नहीं बता सकते कि वह आयतें विज्ञान की अनुकूलता में सही अथवा गलत हैं, क्योंकि खुद उन्हें उन आयतों में दी गई जानकारी के संदर्भ का कोई ज्ञान नहीं। उनके संदर्भ से प्रजनन के आधुनिक अध्ययन और शोध पत्रों में भी कुछ उप्लब्ध नहीं था।"

ऐसी ही एक पवित्र आयत निम्नलिखित हैः "पढ़ो (ऐ नबी) अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया, जमे हुए रक्त के एक थक्के से मानव जाति की उत्पत्ति की।"

(सूरहः 96 आयतः 1–2)

यहाँ अरबी शब्द "अलक़" प्रयुक्त हुआ है जिसका एक अर्थ तो 'रक्त का थक्का' है जब कि दूसरा अर्थ है 'कोई ऐसी वस्तु जो चिपट जाती हो' यानी जोंक जैसी कोई वस्तु। डॉ. कीथ मूर को ज्ञान नहीं था कि गर्भ के प्रारम्भ में भ्रूण (Embryo) का स्वरूप जोंक जैसा होता है या नहीं। यह मालूम करने के लिये उन्होंने बहुत शक्तिशाली और अनुभूतिशील यंत्रों की सहायता से, भ्रूण (Embryo) के प्रारम्भिक स्वरूप का एक और गम्भीर अध्ययन किया। तत्पश्चात उन चित्रों की तुलना जोंक के चित्रांकन से की, वह उन दोनों के मध्य असाधारण समानता देख कर आश्चर्यचकित रह गये। इसी प्रकार उन्होंने भ्रूण विज्ञान के बारे में अन्य जानकारियां भी प्राप्त कीं जो पवित्र कुरआन से ली गयी थीं और अब से पहले वह इनसे परिचित नहीं थे।

भ्रूण के बारे में ज्ञान से संबंधित जिन प्रश्नों के उत्तर डॉ. कीथ मूर ने कुरआन और हदीस से प्राप्त सामग्री के आधार पर दिये उनकी संख्या 80 थी। कुरआन व हदीस में प्रजनन की प्रकृति से संबंधित उप्लब्ध ज्ञान केवल आधुनिक ज्ञान से परस्पर सहमत ही नहीं बल्कि डॉ. कीथ मूर अगर आज से तीस वर्ष पहले मुझसे यही सारे प्रश्न करते तो वैज्ञानिक जानकारी के अभाव में, मै इनमें से आधे प्रश्नों के उत्तर भी नही दे सकता था।

1981 ई. में दम्माम (सऊदी अरब) में आयोजित 'सप्तम चिकित्सा सम्मेलन' में डॉ0 मूर ने कहा, "मेरे लिये बहुत ही प्रसन्नता की स्थिति है कि मैंने पवित्र कुरआन में उप्लब्ध 'गर्भावधि में मानव के विकास' से सम्बंधित सामग्री की व्याख्या करने में सहायता की। अब मुझ पर यह स्पष्ट हो चुका है कि यह सारा विज्ञान पैगम्बर मुहम्मद (स0अ0व0) तक खुदा या अल्लाह ने ही पहुंचाया है क्योंकि कमो–बेश यह सारा ज्ञान पवित्र कुरआन के अवतरण के कई सदियों बाद ढूंढा गया था।

इससे भी सिद्ध होता है कि मुहम्मद (स0अ0व0) निःसन्देह अल्लाह के रसूल (संदेशवाहक) ही थे । इस घटना से पूर्व डा० कीथ मूर The developing human

(विकासशील मानव) नामक पुस्तक लिख चुके थे। पवित्र कुरआन से नवीन ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद उन्होंने 1982ई० में इस पुस्तक का तीसरा संस्करण तैयार किया। उस संस्करण को वैश्विक शाबाशी और ख्याति मिली और उसे वैश्विक धरातल पर सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पुस्तक का सम्मान भी प्राप्त हुआ। उस पुस्तक का अनुवाद विश्व की कई बड़ी भाषाओं में किया गया और उसे चिकित्सा विज्ञान पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में चिकित्सा शास्त्र के विद्यार्थियों को अनिवार्य पुस्तक के रूप में पढ़ाया जाता है।

डॉ० जोहम्पसन, बेलर कॉलिज ऑफ मेडिसिन, ह्यूस्टन, अमरीका में ''गर्भ एवं प्रसव विभाग Obstetrics and Gynecology के अध्यक्ष हैं। उनका कथन है, "यह मुहम्मद (स0अ0व0) की हदीस में कही हुई बातें किसी भी प्रकार लेखक के काल, 7वीं सदी ई० में उप्लब्ध वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर पेश नहीं की जा सकती थीं। इससे न केवल यह ज्ञात हुआ कि 'अनुवांशिक' (Genetics) और मजहब यानी इसलाम में कोई भिन्नता नहीं है बल्कि यह भी पता चला कि इस्लाम मजहब इस प्रकार से विज्ञान का नेतृत्व कर सकता है कि परम्पराबद्ध वैज्ञानिक दूरदर्शिता में कुछ इल्हामी रहस्यों को भी शामिल करता चला जाए। पवित्र कुरआन में ऐसे बयान मौजूद हैं जिनकी पुष्टि कई सदियों बाद हुई है। इससे हमारे उस विश्वास को शक्ति मिलती है कि पवित्र कुरआन में उप्लब्ध ज्ञान वास्तव में अल्लाह की ओर से ही आया है।"

रीढ़ की हड्डी और पस्लियों के बीच से रिसने वाली बूंदः

"फिर जरा इन्सान यही देख ले कि वह किस चीज से पैदा किया गया। एक उछलने वाले पानी से पैदा किया गया है, जो पीठ और सीने की हड्डियों के बीच से निकलता है।" (सूरहः 86, आयतः 5–7)

प्रजनन अवधि में संतान उत्पन्न करने वाले जनांगों यानि 'अण्डग्रंथि' (Testicles) और 'अण्डाशय' (Ovary) 'गुर्दो' (kidneys) के पास से 'मेरूदण्ड' (Spinal Cord) और ग्यारहवीं बारहवीं पस्लियों के बीच से निकलना प्रारम्भ करते हैं इसके बाद वह कुछ नीचे उतर आते हैं। 'महिला प्रजनन ग्रंथियां' (Gonads) यानि गर्भाशय 'पेडू' (Pelvis) में रूक जाती हैं, जबकि पुरूष जनांग 'वंक्षण नली' (Inguinal Canal) के मार्ग से 'अण्डकोष' (Scrotum) तक जा पहुंचते हैं। यहां तक कि व्यस्क होने पर जबकि प्रजनन ग्रंथियों के नीचे सरकने की क्रिया रूक चुकी होती है। उन ग्रंथियों में 'उदरीय महाधमनी' (Abdominal Aorta) के माध्यम से रक्त और स्नायु समूह का प्रवेश क्रम जारी रहता है। ध्यान रहे कि 'उदरीय महाधमनी' (Abdominal Aorta) रीढ़ की हड्डी और पस्लियों के बीच होती है। 'लसीका निकास' (Lymphatic Drainage) और धमनियों में रक्त प्रवाह भी इसी दिशा में होता है।

शुक्राणु–न्यूनतम द्रव

पवित्र कुरआन में कम से कम ग्यारह बार दुहराया गया है कि मानव जाति की रचना' वीर्य 'नुत्फ़ा' से की गई है जिसका अर्थ द्रव का न्यूनतम भाग है। यह बात पवित्र कुरआन की कई आयतों में बार–बार आई है जिन में सूरह 22, आयत–15 और सूरह 23, आयत–13 के अलावा सूरह 16, आयत–14, सूरह 18, आयत–37, सूरह 35, आयत–11, सूरह 36 आयत–77, सूरह 40 आयत–67, सूरह 53, आयत–46, सूरह 76, आयत–2 और सूरह 80, आयत–19 शामिल हैं।

विज्ञान ने हाल ही में यह खोज निकाला है कि 'अण्डाणु' (Ovum) को काम में लाने के लिये औसतन तीस लाख वीर्य 'शुक्राणु' (Sperms) में से सिर्फ एक की आवश्यकता होती है। अर्थ यह हुआ कि स्खलित होने वाली वीर्य की मात्रा का तीस लाखवाँ भाग या 1/30,000,00 प्रतिशत मात्रा ही गर्भाधान के लिये पर्याप्त होती है।

'सुलालाः प्रारम्भिक द्रव' के गुणः

"फिर उसकी नस्ल एक ऐसे रस से चलाई जो तुच्छ जल की भांति है।" (सूरहः 32 – आयतः 8)

अरबी शब्द 'सुलाला' से तात्पर्य किसी द्रव का सर्वोत्तम अंश है। सुलाला का शाब्दिक अर्थ 'नवजात शिशु' भी है। अब हम जान चुके हैं कि स्त्रैन अण्डे की तैयारी के लिये पुरूष द्वारा स्खलित लाखों करोड़ों वीर्य शुक्राणुओं में से सिर्फ एक की आवश्यकता होती है। लाखों करोड़ों में से इसी एक वीर्य शुक्राणु (Sperm) को पवित्र कुरआन ने 'सुलाला' कहा है। अब हमें यह भी पता चल चुका है कि महिलाओं में उत्पन्न हजारों 'अण्डाणुओं' (Ovum) में से केवल एक ही सफल होता है। उन हजारों अंडों में से किसी एक कर्मशील और योग्य अण्डे के लिये पवित्र कुरआन ने सुलाला शब्द का प्रयोग किया है। इस शब्द का एक और अर्थ भी है किसी द्रव के अंदर से किसी रस विशेष का सुरक्षित स्खलन। इस द्रव का तात्पर्य पुरूष और महिला दोनों प्रकार के प्रजनन द्रव भी हैं जिनमें लिंगसूचक वीर्य मौजूद होते है। गर्भाधान की अवधि में स्खलित वीर्यों से दोनों प्रकार के अंडाणु ही अपने–अपने वातावरण से सावधानी पूर्वक बिछड़ते हैं।

संयुक्त वीर्य– परस्पर मिश्रित द्रवः

"हम ने मानव को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया ताकि

उसकी परीक्षा लें और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये हमने उसे सुनने और देखने वाला बनाया।" (सूरहः 76 आयतः 2)

अरबी शब्द 'नुत्फतिन अम्शाज' का अर्थ मिश्रित द्रव है। कुछेक ज्ञानी व्याख्याताओं के अनुसार मिश्रित द्रव का तात्पर्य पुरूष और महिला के प्रजनन द्रव हैं। पुरूष और महिला के इस द्वयलिंगी मिश्रित वीर्य को "युग्मनज जुफ़्ता" कहते हैं, जिसका पूर्व स्वरूप भी वीर्य ही होता है। परस्पर मिश्रित द्रव का एक दूसरा अर्थ वह द्रव भी हो सकता है जिसमें संयुक्त या मिश्रित वीर्य शुक्राणु या वीर्य अण्डाणु तैरते रहते है। यह द्रव कई प्रकार के शारिरिक रसायनों से मिल कर बनता है जो कई शारिरिक ग्रंथियों से स्खलित होता है। इस लिये 'नुत्फा–ए–अम्शाज' (संयुक्त वीर्य) यानि परस्पर मिश्रित द्रव के माध्यम से बने नवीन पुलिगं या स्त्रीलिगं वीर्य द्रव्य या उसके चारों ओर फैले द्रव्यों की ओर संकेत किया जा रहा है।

लिंग का निर्धारणः

परिपक्व भ्रूण (Foetus) के लिगं का निर्धारण यानि उससे लड़का होगा या लड़की? स्खलित वीर्य शुक्राणुओं से होता है न कि अण्डाणुओं से। अर्थात मां के गर्भाशय में ठहरने वाले गर्भ से लड़का उत्पन्न होगा, यह क्रोमोजोम के 23वें जोड़े में क्रमशः XX/XY वर्णसूत्र (Chromosome) अवस्था पर होता है। प्रारिम्भक तौर पर लिगं का निर्धारण समागम के अवसर पर हो जाता है और वह स्खलित वीर्य शुक्राणुओं (Sperm) के काम वर्णसूत्र पर होता है जो अण्डाणुओं की उत्पत्ति करता है। अगर अण्डे को उत्पन्न करने वाले शुक्राणुओं में X वर्णसूत्र है तो ठहरने वाले गर्भ से लड़की पैदा होगी। इसके उलट अगर शुक्राणुओं में Y वर्णसूत्र है तो ठहरने वाले गर्भ से लड़का पैदा होगा।

"और यह कि उसी ने नर और मादा का जोड़ा पैदा किया, एक बूंद से जब वह टपकाई जाती है।"

(सूरहः 53 आयातः 45–46)

यहाँ अरबी शब्द 'नुत्फ़ा' का अर्थ तो द्रव की बहुत कम मात्रा है जबकि तुम्ना का अर्थ तीव्र स्खलन या पौधे का बीजारोपण है। इस लिये नुतफ़ (वीर्य) मुख्यता शुक्राणुओं की ओर संकेत कर रहा है क्योंकि यह तीव्रता से स्खलित होता है, पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

"क्या वह एक तुच्छ पानी का जल वीर्य नहीं था जो माता के गर्भाशय में टपकाया जाता है? फिर वह एक थक्का (लोथड़ा) बना फिर अल्लाह ने उसका शरीर बनाया और उसके अंगों को ठीक किया, फिर उससे दो प्रकार के (मानव) पुरूष और महिला बनाए।" (सूरहः 75 आयतः 37–39)

ध्यान पूर्वक देखिए कि यहाँ एक बार फिर यह बताया गया है कि बहुत ही न्यूनतम मात्रा (बूंदों) पर आधारित प्रजनन द्रव जिसके लिये अरबी शब्द "नुत्फतिम–मिम–मनी" अवतरित हुआ है, जो कि पुरूष की ओर से आता है और माता के गर्भाशय में बच्चे के लिंग निर्धारण का मूल आधार है।

उपमहाद्वीप में यह अफसोसनाक रिवाज है कि आम तौर पर जो महिलाएं सास बन जाती हैं उन्हें पोतियों से अधिक पोतों का अरमान होता है अगर बहु के यहां बेटों के बजाए बेटियां पैदा हो रहीं हैं तो वह उन्हें "पुरूष संतान" पैदा न कर पाने के ताने देती हैं। अगर उन्हें केवल यही पता चल जाता है कि संतान के लिंग निर्धारण में महिलाओं के अण्डाणुओं की कोई भूमिका नहीं और उसका तमाम उत्तरदायित्व पुरूष वीर्य (शुक्राणुओं) पर निर्भर होता है और इसके बावजूद वह ताने दें तो उन्हें चाहिए कि वह "पुरूष संतान" न पैदा होने पर, अपनी बहुओं के बजाए बपने बेटों को ताने दें या कोसें और उन्हें बुरा भला कहें। पवित्र कुरआन और आधुनिक विज्ञान दोनों ही इस विचार पर सहमत हैं कि बच्चे के लिंग निर्धारण में पुरूष शुक्राणुओं की ही जिम्मेदारी है तथा महिलाओं का इसमें कोई दोष नहीं।

तीन अंधेरे पर्दों में सुरक्षित 'उदर':

"उसी ने तुमको एक जान से पैदा किया। फिर वही है जिसने उस जान से उसका जोड़ा बनाया और उसी ने तुम्हारे लिये मवेशियों में से आठ नर और मादा पैदा किये और वह तुम्हारी मांओं के 'उदरों' (पेटो) में तीन–तीन अंधेरे पर्दों के भीतर तुम्हें एक के बाद एक स्वरूप देता चला जाता है। यही अल्लाह (जिसके यह काम हैं) तुम्हारा रब है। बादशाही उसी की है, कोई माबूद (पूजनीय) उसके अतिरिक्त नहीं है।" (सूरहः 39 आयतः 6)

प्रोफेसर डॉ. कीथ मूर के अनुसार पवित्र कुरआन में अंधेरे के जिन तीन पर्दों की चर्चा की गई है वह निम्नलिखित हैंः 1– मां के गर्भाशय की अगली दीवार। 2– गर्भाशय की मूल दीवार। 3– भ्रूण का खोल या उसके ऊपर लिपटी झिल्ली।

भ्रूणीय अवस्थाएंः

"हम ने मानव को मिट्टी के रस (सत) से बनाया फिर उसे एक सुरक्षित स्थल पर टपकी हुई बूंद में परिवर्तित किया, फिर उस बूंद को लोथड़े का स्वरूप दिया, तत्पश्चात लोथड़े को बोटी बना दिया फिर बोटी की हड्डियां बनाई, फिर हड्डियों पर मांस चढ़ाया फिर उसे एक दूसरा ही रचना बना कर खड़ा किया बस बड़ा ही बरकत वाला है अल्लाह य सब कारीगरों से अच्छा कारीगर।" (सूरहः 23 आयातः 12–14)

इन पवित्र आयतों में अल्लाह तआला फरमाते हैं कि

मानव को द्रव की बहुत ही सूक्ष्म मात्रा से बनाया गया अथवा सृजित किया गया है, जिसे विश्राम (Rest) स्थल में रख दिया जाता है, यह द्रव उस स्थल पर मजबूती से चिपटा रहता है। यानि स्थापित अवस्था में, और इसी अवस्था के लिये पवित्र कुरआन में 'करार मकीन' का गद्यांश अवतरित हुआ है। माता के गर्भाशय के पिछले हिस्से को रीढ़ की हड्डी और कमर के पट्ठों की बदौलत काफी सुरक्षा प्राप्त होती है। उस भ्रूण को अनन्य सुरक्षा 'प्रजनन थैली' (Amniotic Sac) से प्राप्त होती है जिसमें प्रजनन द्रव (Amniotic Fluid) भरा होता है। अतः सिद्ध हुआ कि माता के गर्भ में एक ऐसा स्थल है जिसे सम्पूर्ण सुरक्षा दी गई है। द्रव की चर्चित न्यूनतम मात्रा 'अलकह' के रूप में होती है यानि एक ऐसी वस्तु के स्वरूप में जो "चिमट जाने" में सक्षम है। इसका तात्पर्य जोंक जैसी कोई वस्तु भी है। यह दोनों व्याख्याएं विज्ञान के आधार पर स्वीकृति के योग्य हैं क्योंकि बिल्कुल प्रारम्भिक अवस्था में भ्रूण वास्तव में माता के गर्भाशय की भीतरी दीवार से चिमट जाता है जबकि उसका बाहरी स्वरूप भी किसी जोंक के समान होता है।

इसकी कार्यप्रणाली जोंक की तरह ही होती है क्योंकि यह 'आंवल नाल' के मार्ग से अपनी मां के शरीर से रक्त प्राप्त करता और उससे अपना आहार लेता है। 'अलकह' का तीसरा अर्थ रक्त का थक्का है। इस अलकह वाले अवस्था से जो गर्भ ठहरने के तीसरे और चौथे सप्ताह पर आधारित होता है बंद धमनियों में रक्त जमने लगता है। अतः भ्रूण का स्वरूप केवल जोंक जैसा ही नहीं रहता बल्कि वह रक्त के थक्के जैसा भी दिखाई देने लगता है। अब हम पवित्र कुरआन द्वारा प्रदत्त ज्ञान और सदियों के संघर्ष के बाद विज्ञान द्वारा प्राप्त आधुनिक जानकारियों की तुलना करेंगे।

1677ई० हेम और ल्यूनहॉक ऐसे दो प्रथम वैज्ञानिक थे जिन्होंने खुर्दबीन (Microscope) से वीर्य शुक्राणुओं का अध्ययन किया था। उनका विचार था कि शुक्राणुओं की प्रत्येक कोशिका में एक छोटा सा मानव मौजूद होता है जो गर्भाशय में विकसित होता है और एक नवजात शिशु के रूप में पैदा होता है। इस दृष्टिकोण को 'छिद्रण सिद्धान्त' (Perforation Theory) भी कहा जाता है। कुछ दिनों के बाद जब वैज्ञानिकों ने यह खोज निकाला कि महिलाओं के अण्डाणु, शुक्राणु कोशिकाओं से कहीं अधिक बड़े होते हैं तो प्रसिद्ध विशेषज्ञ डी० ग्राफ़ सहित कई वैज्ञानिकों ने यह समझना शुरू कर दिया कि अण्डे के अंदर ही मानवीय अस्तित्व सूक्ष्म अवस्था में पाया जाता है। इसके कुछ और दिनों बाद, 18वीं सदी ईसवी में मोपेशस (Maupeitius) नामक वैज्ञानिक ने उपरोक्त दोनों विचारों के प्रतिकूल इस दृष्टिकोण का प्रचार शुरू किया कि, कोई बच्चा अपनी माता और पिता दोनों की 'संयुक्त विरासत' (Joint Inheritance) का प्रतिनिधि होता है। अलकह परिवर्तित होता है और "मुज़गह" के स्वरूप में आता है, जिसका अर्थ है कोई वस्तु जिसे चबाया गया हो यानि जिस पर दांतों के निशान हों और कोई ऐसी वस्तु हो जो चिपचिपी (लेसदार) और सूक्ष्म हो, जैसे च्युंगम की तरह मुंह में रखा जा सकता हो। वैज्ञानिक आधार पर यह दोनों व्याख्याएं सटीक हैं। प्रोफेसर कीथ मूर ने प्लास्टो सेन (रबर और च्युंगम जैसे द्रव) का एक टुकड़ा लेकर उसे प्रारम्भिक अवधि वाले भ्रूण का स्वरूप दिया और दांतों से चबाकर 'मुज़गह' में परिवर्तित कर दिया। फिर उन्होंने इस प्रायोगिक 'मुज़गह' की संरचना की तुलना प्रारम्भिक भ्रूण (Foetus) के चित्रों से की इस पर मौजूद दांतों के निशान मानवीय 'मुज़गह' पर पड़े कायखण्ड (Somites) के समान थे जो गर्भ में 'मेरूदण्ड' (Spinal Cord) के प्रारिम्भक स्वरूप को दर्शाते हैं।

अगले चरण में यह मुज़गह परिवर्तित होकर हड्डियों का रूप धारण कर लेता है। उन हड्डियों के गिर्द नरम और बारीक मांस या पट्ठों का गिलाफ (खोल) होता है। फिर अल्लाह तआला उसे एक बिल्कुल ही अलग जीव का रूप दे देता है।

अमरीका में थॉमस जिफ़र्सन विश्वविद्यालय, फिलाडॅल्फिया के उदर विभाग में अध्यक्ष, दन्त संस्थान के निदेशक और अधिकृत वैज्ञानिक प्रोफेसर मारशल जौंस से कहा गया कि वह भ्रूण विज्ञान के संदर्भ से पवित्र कुरआन की आयतों की समीक्षा करें। पहले तो उन्होंने यह कहा कि कोई असंख्य प्रजनन चरणों की व्याख्या करने वाली कुरआनी आयतें किसी भी प्रकार से सहमति का आधार नहीं हो सकतीं और हो सकता है कि पैगम्बर मुहम्मद (स0अ0व0) के पास बहुत ही शक्तिशाली खुर्दबीन रही हो। जब उन्हें यह याद दिलाया गया कि पवित्र कुरआन का नुजूल (अवतरण) 1400 वर्ष पहले हुआ था और विश्व की पहली खुर्दबीन भी हजरत मुहम्मद (स0अ0व0) के सैंकड़ों वर्ष बाद अविष्कृत हुई थी तो प्रोफेसर जौंस हंसे और यह स्वीकार किया कि पहली अविष्कृत खुर्दबीन भी दस गुणा ज़्यादा बड़ा स्वरूप दिखाने में समक्ष नहीं थी और उसकी सहायता से सूक्ष्म दृश्य को स्पष्ट रूप में नहीं देखा जा सकता था। तत्पश्चात उन्होंने कहा कि फिलहाल मुझे इस संकल्पना में कोई विवाद दिखाई नहीं देता कि जब पैगम्बर मोहम्मद (स0अ0व0) ने पवित्र कुरआन की अयतें पढ़ीं तो

उस समय विश्वस्नीय तौर पर कोई आसमानी (इल्हामी) शक्ति भी साथ में काम कर रही थी।

डा० कीथ मूर का कहना है कि प्रजनन विकास के चरणों का जो वर्गीकरण सारी दुनिया में प्रचलित है, आसानी से समझ में आने वाला नहीं है, क्योंकि उसमें प्रत्येक चरण को एक संख्या द्वारा पहचाना जाता है जैसे चरण संख्या–1, चरण संख्या–2 आदि। दूसरी ओर पवित्र कुरआन ने प्रजनन के चरणों का जो विभाजन किया है उसका आधार पृथक और आसानी से चिन्हित करने योग्य अवस्था या संरचना पर है। यही वह चरण हैं, जिनसे कोई प्रजनन एक के बाद एक गुजरता है, इसके अलावा यह अवस्थाएं (संरचनाएं) जन्म से पूर्व, विकास के विभिन्न चरणों का नेतृत्व करतीं हैं और ऐसी वैज्ञानिक व्याख्याए उप्लब्ध करातीं हैं जो बहुत ही ऊंचे स्तर की तथा समझने योग्य होने के साथ–साथ व्यवहारिक महत्व भी रखतीं हैं। मातृ गर्भाशय में मानवीय प्रजनन विकास के विभिन्न चरणों की चर्चा निम्नलिखित पवित्र आयतों में भी समझी जा सकती हैं।

"क्या वह एक तुच्छ पानी का वीर्य न था जो (मातृ गर्भाशय में) टपकाया जाता है? फिर वह एक थक्का बना फिर अल्लाह ने उसका शरीर बनाया और उसके अंग ठीक किये फिर उससे मर्द और औरत की दो किस्में बनाई।"

(सूरहः 75 आयतः 37–39)

"जिसने तुझे पैदा किया, तुझे आकार प्रकार (नक–सक) से ठीक किया, तुझे उचित अनुपात में बनाया और जिस स्वरूप में चाहा तुझे जोड़ कर तैयार किया।"

(सूरहः 82 आयतः 7–8)

अर्द्ध निर्मित एंव अर्द्ध अनिर्मित गर्भस्थ–भ्रूणः

अगर 'मुज़गह' की अवस्था पर 'गर्भस्थ–भ्रूण' बीच से काटा जाए और उसके अंदरूनी भागों का अध्ययन किया जाए तो हमें स्पष्ट रूप से नजर आएगा कि (मुज़गह के भीतरी अंगों में से) अधिकतर पूरी तरह बन चुके हैं, जब कि शेष अंग अपने निर्माण के चरणों से गुजर रहे हैं। प्रोफेसर जौंस का कहना है कि अगर हम पूरे गर्भस्थ–भ्रूण को एक सम्पूर्ण अस्तित्व के रूप में बयान करें तो हम केवल उसी हिस्से की बात कर रहे होंगे जिसका निर्माण पूरा हो चुका है और अगर हम उसे अर्द्ध निर्मित अस्तित्व कहें तो फिर हम गर्भस्थ–भ्रूण के उन भागों का उदाहरण दे रहे होंगे जो अभी पूरी तरह से निर्मित नहीं हुए बल्कि निर्माण की प्रक्रिया पूरी कर रहे हैं। अब सवाल यह उठता है कि उस अवसर पर गर्भस्थ–भ्रूण को क्या सम्बोधित करना चाहिये? सम्पूर्ण अस्तित्व या अर्द्ध निर्मित अस्तित्व। गर्भस्थ–भ्रूण के विकास की इस प्रक्रिया के बारे में जो व्याख्या हमें पवित्र कुरआन ने दी है उससे बेहतर कोई अन्य व्याख्या सम्भव नहीं है। पवित्र कुरआन इस चरण को 'अर्द्ध निर्मित अर्द्ध अनिर्मित' की संज्ञा देता है। निम्नलिखित आयतों का आशय देखिएः

"लोगो! अगर तुम्हें जीवन के बाद मृत्यु के बारे में कुछ शक है तो तुम्हें मालूम हो कि हम ने तुमको मिट्टी से पैदा किया है, फिर वीर्य से, फिर रक्त के थक्के से, फिर मांस की बोटी से जो स्वरूप वाली भी होती है और बेरूप भी, यह हम इसलिये बता रहे हैं ताकि तुम पर यथार्थ स्पष्ट करें। हम जिस (वीर्य) को चाहते हैं एक विशेष अवधि तक गर्भाशय में ठहराए रखते हैं। फिर तुम को एक बच्चे के स्वरूप में निकाल लाते हैं (फिर तुम्हारी पर्वरिश करते हैं) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुंचो।" (सूरहः 22 आयतः 5)

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हम जानते हैं कि गर्भस्थ–भ्रूण विकास के इस प्रारम्भिक चरण में कुछ वीर्य ऐसे होते हैं जो एक पृथक स्वरूप धारण कर चुके होते हैं, जबकि कुछ स्खलित वीर्य विशेष तुलनात्मक स्वरूप में आए नहीं होते। यानि कुछ अंग बन चुके होते हैं और कुछ अभी अनिर्मित अवस्था में होते हैं।

सुनने और देखने की इंद्रियाँः मां के गर्भाशय में विकसित हो रहे मानवीय अस्तित्व में सब से पहले जो इंद्रिय जन्म लेती है वह श्रवण इंद्रियाँ होती हैं। 24 सप्ताह के बाद परिपक्व भ्रूण (Mature Foetus) आवाजें सुनने के योग्य हो जाता है। फिर गर्भ के 28 वें सप्ताह तक दृष्टि इंद्रियां भी अस्तित्व में आ जाती हैं और दृष्टिपटल (Retina) रौशनी के लिये अनुभूत हो जाता है। इस प्रक्रिया के बारे में पवित्र कुरआन यूं फरमाता हैः

"फिर उसको नक–सक से ठीक किया और उसके अंदर अपने प्राण डाल दिये और तुम को कान दिये, आंखें दीं और दिल दिये, तुम लोग कम ही शुक्रगुजार होते हो।"

(सूरहः 32 आयतः 9)

"हम ने मानव को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया ताकि उसकी परीक्षा लें और इस उद्देश्य के लिये हम ने उसे सुनने और देखने वाला बनाया।" (सूरहः 76 आयतः 2)

"वह अल्लाह ही तो है जिसने तुम्हें देखने और सुनने की शक्तियां दीं और सोचने को दिल दिये मगर तुम लोग कम ही शुक्रगुजार होते हो।" (सूरहः 23, आयतः 78)

ध्यान दीजिये कि तमाम पवित्र आयतों में श्रवण–इंद्रिय की चर्चा दृष्टि–इंद्रिय से पहले आयी हुई है इससे सिद्ध हुआ कि पवित्र कुरआन द्वारा प्रदत्त व्याख्याएं, आधुनिक प्रजनन विज्ञान में होने वाले शोध और खोजों से पूरी तरह मेल खाती हैं या समान हैं।

फ़िरऔन की लाश

डॉक्टर मोरिस बुकाए

फिरऔन (Pharao) नाम नहीं बल्कि मिस्र के बादशाहों की उपाधि (Common Title) है। ऐसे लगभग 14 फिरऔन अर्थात मिस्र के बादशाहों के नाम मिलते हैं। रामेसेस महान के उन्नीसवे वंश का तीसरा फिरऔन (Pharao) (Ramesses II) की लाश पर फ्रांस के इसाई डाक्टर मोरिस बोकाय की रिसर्च के कारण लगातार चर्चा में बना हुआ है। रिसर्च करके उन्होंने माना कि यह वही फिरऔन है जिसकी कुरआन में भविष्यवाणी की गयी थी कि अल्लाह इसकी लाश इबरत (Warning) के लिए सलामत रखेगा।

धर्मग्रंथ के सच्चे होने की एक निशानी यह भी होती है कि उसमें कही गयी बातें देर–सवेर किसी तरह सच साबित होती हैं जैसे की फिरऔन बादशाह की लाश और कुरआन पर हुई रिसर्च के बाद ईसाई दुनिया में तहलका मच गया था। स्वयं रिसर्च करने वाला मुसलमान हुआ या नहीं इस बात में शक हो सकता है लेकिन उसके सच बोलना पसंद करने कारण लाखों ईसाईयों को इस्लाम की तरफ आने का कारण बना इस बात में कोई शक नहीं। फ्रांस जहां कि आज मुसलमानों की जनसंख्या दूसरे नंबर है इस रिसर्च के बाद फिर इसी डॉक्टर कि पुस्तक (The Bible - The Quran & Science) से भी इसाई दुनिया इस्लाम की ओर आकर्षित हुई थी। इस रिसर्च के बाद इसाई और यहूदियों ने फिरऔन के अंत को अपनी धार्मिक किताबों में बदलना शुरू कर दिया। झूठा इतिहास तैयार करने का सबूत 'टेंथ कमांडेट' फिल्म में फिरऔन को डूबता नहीं बल्कि जंग से महल वापस जाता दिखाया गया है।

थोड़े–थोड़े समय बाद कुरआन अपना ईश्वरीय कलाम होना साबित करता रहा है जैसे इस लेख में जानेंगे कि फिरऔन का जिस्म और रिसर्च करने वाले डाक्टर ने सच्चाई को समझ कर बाकी जिंदगी कुरआन की सच्चाई से दूसरों को अवगत कराने में बिता दी।

मोरिस बुकाय (Maurice Bucaille) (जन्म 1920) फ्रेंच चिकित्सक थे। पेरिस के अस्पताल में सर्जिकल में विशेषज्ञ के रूप में काम करते रहे। प्रतिष्ठा का सबसे बडा कारण पुस्तक "बाइबल कुरआन और विज्ञान" है, जिसमें आपने यह साबित किया है कि कुरआन की कोई बात वैज्ञानिक दृष्टिकोण के खिलाफ नहीं है। जबकि बाइबल की कई बातें आधुनिक वैज्ञानिक तथ्यों से गलत साबित होती हैं। यह फ्रेंच किताब बहुत लोकप्रिय हुई और कई उर्दू, इंग्लिश सहित कई भाषाओं में अनुवाद किया गया। इस्लामी दुनिया में किताब बहुत लोकप्रिय हुई और इस रिसर्च को "ब्यूकलीजम" नाम दिया गया।

फिरऔन की लाश के बाल भी अलग–अलग दिखायी देते हैं अगर यह ममी होती तो तमाम हिस्से पर मेंहदी की तरह हड्डियों को सलामत रखने वाला मसाला लगा होता।

फ़िरऔन का शरीर फ़्रांस में:

फ्रांस के बारे में यह प्रसिद्ध है कि वह पुरातत्व का सबसे अधिक सरपरस्ती करने वाला देश है, जिस समय फ्रांस का प्रधान मंत्री फरांसू मीटारान François Mitterrand 1981 में हुआ तो उसने मिस्र से मिस्र के फिरऔन की लाश मांगी ताकि उस पर कुछ चिकित्सा अनुमान Archaeological tests and examinations किया जाये। अतः फिरऔन की लाश फ्रांस लाई गयी और जिस समय यह लाश फ्रांस के हवाई अड्डा पर विमान से उतरी तो फ्रांस के प्रधानमंत्री ने उसका इस प्रकार स्वागत किया कि लगता था फिरऔन जिवित है तथा अब भी चीख रहा है कि मैं तुम सबका सब से बडा पालनहार हूं।

अतः शव फ्रांस के पुरातत्व सेन्टर ले जायगा गया ताकि बड़े–बड़े चिकित्सक उसके बारे में रिसर्च करें तथा चिकित्सकों के प्रधान मोरिस बुकाय थे। रिसर्च में मोरिस बुकाय का ध्यान इस पर था कि यह पता लगाया जाये कि इस फिरऔन का देहांत कैसे हुआ है जबकि दूसरे लोग कुछ और ही गवेषणा कर रहे थे। जांच से पता चला कि यह अर्थात जिसका यह शव है वो रात के अन्तिम समय में जलमग्न हो (डूब) कर मरा है क्योंकि उसके शरीर पर कुछ समुन्द्री नमक का भाग बाकी था। साथ ही साथ यह भी पता चला कि उसकी लाश डूबने के कुछ ही समय बाद निकाली गयी है। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि दूसरी फिरऔनी लाशों के अलावा इसकी लाश केवल इस प्रकार

सुरक्षित क्यों बाकी है जब कि सारी लाशें समुंद्र से निकाली गयी हैं?

मोरिस बुकाय सारे रिसर्च की फाइनल रिपोर्ट लिख रहे थे कि अचानक एक आदमी ने उनके कान में चुपके से कहा कि जल्दी न करो मुसलमान लोगों का कहना है कि वह जलमग्न होकर मरा है। परन्तु मोरिस ने इस सूचना को बिल्कुल नकार दिया तथा आश्चर्य में पड़ गए कि इस प्रकार का ज्ञान बडी मशीनों से रिसर्च करने के बाद ही हो सकता है। फिर उसी आदमी ने कहा कि वह कुरआन जिस पर मुसलमान विश्वास करते हैं उसमें इसके जलमग्न होने तथा इसकी लाश के सुरक्षित रहने का वर्णन आया है। इस से उनका आश्चर्य और ही बढ़ गया तथा लोगों से पूछने लगे कि यह कैसे हो सकता है? जबकि इस लाश का गवेषणा लगभग दो वर्ष पहले 1898 में हुआ है जबकि उनका कुरआन 1400 सौ सालों पहले से है। यह बात बुद्धि में कैसे आ सकती है? जब कि केवल अरब ही नहीं बल्कि सारे के सारे मनुष्य कुछ वर्ष पहले मिस्र के पुराने लोग अपने फिरऔनों पर मसाला लगाना जानते हैं।

मोरिस बुकाय पूरी रात बैठ कर ध्यान पूर्वक अपने मित्र की बात को सोचते रहे कि मुसलमानों के कुरआन में डूबने के बाद इस लाश के बचने का वर्णन आया है। जबकि तौरात में यह है कि फिरऔन उस समय डूबा है जब मूसा भाग रहा था और इस में उसकी लाश के बारे में कोई चर्चा नहीं है। अतः मोरिस अपने दिल में कहने लगे कि क्या यह बात बुद्धि में आने वाली है कि यह मेरे सामने जो लाश है यह वही मिस्र का फिरऔन है जिसने मूसा को भगाया है? तथा क्या यह बात बुद्धि में आने वाली है कि मुसलमानों का मुहम्मद (स0अ0) यह बात एक हजार वर्ष से अधिक पहले जान जाये? और मैं अब जान पाया हूं।

मोरिस सो न सके तथा तौरात मंगाया और तौरात में पाया कि जल ने फिरऔन की सारी सेना को लपेट लिया और उनमें से कोई न बचा। परन्तु मोरिस को बराबर आश्चर्य रहा कि पूरे तौरात में कहीं भी इसकी लाश के ठीक–ठाक बच जाने का वर्णन नहीं मिलता है।

फिरऔन की लाश को चिकित्सा एवं सुधार के बाद फ्रांस ने फिरऔन के वैभव के अनुसार शीशे के ताबूत में भेज दिया। परन्तु मोरिस को उस बात के कारण जो उन्होंने फिरऔन की लाश के बारे में मुसलमानों की ओर से सुना था चैन न आया। इसी कारण सफर की तैयारी करके सउदी अरब में एक चिकित्सा सम्मेलन में भाग लेने के लिये गये जिस में बहुत से मुसलमान शव परीक्षा करने वाले भी भाग ले रहे थे। वहां पर सबसे पहले मोरिस ने फिरऔन की शव के बारे में जो खोज लगाया था उसी का चर्चा किया। तुरंत एक मुसलमान ने कुरआन खोल कर ईश्वरीय वाणी दिखायाः

"अतः आज हम तेरे शरीर को बचा लेगें, ताकि तू अपने बाद वालों के लिए एक निशानी हो जाए। निश्चय ही, बहुत–से लोग हमारी निशानियों के प्रति असावधान ही रहते है।" (कुरआन–10रू92)

कुरआन की इस आयत का मोरिस पर बहुत बडा प्रभाव पड़ा तथा दिल में इस प्रकार आवेश पैदा हुआ कि सारे लोगों के सामने खडे होकर निसंकोच हो कर घोषणा कर दिया कि मैंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया तथा इस कुरआन पर विश्वास कर लिया।

मोरिस फ्रांस से वापस आये तथा लगभग दस वर्ष तक बिना किसी दूसरे कार्य के इस रिसर्च में लग गये कि आज के समय के नए वैज्ञानिक सिद्धांत एवं अनुसाधान कुरआन से कितना मेल खाते हैं। ताकि कुरआन की इस आयत का परिणाम उन्हें मिल सके।

अब ये अत्याचारी जो कुछ कर रहे है, उससे अल्लाह को असावधान न समझो। वह तो इन्हें बस उस दिन तक के लिए टाल रहा है जबकि आँखे फटी की फटी रह जाएँगी, (कुरआन दृ14रू42)

कुछ ही वर्षों के बाद मोरिस ने फ्रांस में कुरआन के बारे में एक पुस्तक लिखी जिस से पूरे पश्चिमी देश तथा पश्चिमी वैज्ञानिकों को हिला दिया। इस पुस्तक का नाम था ''कुरआन, तौरात, इन्जील एवं ज्ञान, नये मर्म के अनुसार पवित्र पुस्तकों पर रिसर्च –कुरआन और नया चौलेंज।

इस पुस्तक ने क्या किया? जैसे ही पहली बार छपी सारी दुकानों से तुरंत समाप्त हो गयी। फिर फ्रांसिसी भाषा से अरबी, इंग्लिश, इन्डोनेसी, फारसी, तुर्की, उर्दू, गुजराती, अलमानी आदि भाषा में अनुवाद होकर पुनः छापी गयी ताकि पूरब से पश्चिम तक सारे पुस्तकालय में उपलब्ध हो जाये।

यहां यह बात भी याद रहे कि मोरिस की इस पुस्तक पर यहूदी और ईसाई धर्म के सारे वैज्ञानिकों ने खण्डन करने तथा उत्तर देने के प्रयास किया परन्तु किसी ने भी कोई ढंग की पुस्तक न लिखी दाये बायें बहुत चक्कर लगाया परन्तु कोई विशेष बात न लिख सके।

इससे आश्चर्य की बात यह है कि अरब इलाके के कुछ ईसाई एवं यहूदी वैज्ञानिक ने भी खण्डन करने का प्रयास किया परन्तु जब मोरिस की पुस्तक को ध्यान पूर्वक पढ़ने लगे तो मुसलमान हो गये।

अल्लाह की तरफ़ रुजूअ (आकर्षण) के एहतिमाम (प्रबन्ध) की ज़रूरत

"जब क़यामत के क़रीब हालात ख़राब हो जाएं, समाज में बिगाड़ हो जाए, बेदीनी फैल जाए, कुफ़्र उमड़ने लगे, दुश्मनों की ताक़त हमारे ख़िलाफ़ इस्तेमाल होने लगें तो अपनी फ़िक्र करो, निजी सुधार की ओर ध्यान दो। आज परिस्थिति यह है कि जहां बैठ जाओ, जहां चार आदमी एकत्र हो जाएं, हालात की ख़राबी का शिकवा ज़बान पर होगा, चर्चा कर रहे होंगे कि फ़लां ने यह कर दिया, फ़लां ने यह कर दिया...लेकिन क्या जब हम यह चर्चा करते हैं तो ख़ुद भी कभी यह सोचा कि हमारे अन्दर क्या ख़राबी है, हमारे अन्दर कौन सी कमी है जिसको दूर करना चाहिए। अपने सुधार की चिन्ता ख़त्म हो रही है, जिसका परिणाम यह है कि हर आदमी दूसरों के ऐब ढूंढता है, दूसरों की चिन्ता करता है, लेकिन अपने सुधार की चिन्ता पहले करें। आप लोग जानते हैं कि सुधार (इस्लाह) में सभी वर्ग आते हैं, इसमें इबादतें भी दाख़िल हैं, मामलात (लेन–देन) भी, अख़लाक़ (व्यवहार) भी तथा सामाजिकता भी, लेकिन कौन है जो इन चारों वर्गों में सुधार की चिन्ता कर रहा हो? कोई इबादत को दीन समझ बैठा है, कोई मामलों से ग़ाफ़िल है। आप बाहर जाकर देखें तो रिश्वतख़ोरी का बाज़ार गर्म है। हलाल व हराम की फ़िक्र मिट गयी है। अल्लाह का हक़ और बन्दों का हक़ रौंदा जा रहा है, इसकी फ़िक्र लोगों में जगाने की ज़रूरत है।"

दूसरी चीज़ अल्लाह की तरफ़ रुजूअ (आकर्षित होना) है। यह शिकवे तो हर एक करता है कि बड़े बुरे हालात आ गए हैं, लेकिन इस शिकवे के साथ कभी इस तरह की दुआ की जैसे मुसीबत में पड़े होने वाला करता है? इस समय सामूहिक रूप से हमारी स्थिति यह है कि हम एक नाव पर सवार हैं और वह नाव लहरों में घिरी हुई है। चारों ओर से पहाड़ों की भांति लहरें आ रही हैं तो ऐसी हालत में हमें ख़तरा है कि नाव डूब जाएगी। उस समय हम किस इख़्लास व लिल्लाहियत (शुद्धता) के साथ हम उसको पुकारेंगे। हर इन्सान जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान हो, वह अल्लाह ही को पूरे दिल से पुकारेगा, तो क्या इतनी ही बेचैनी के साथ कभी हमने अल्लाह तआला से दुआ की है और इस तरह से अल्लाह तआला की तरफ़ मुड़ते हैं, तो ज़्यादातर लोगों का जवाब न में होगा। अगर हम अपने गिरेबान में झांककर देखें तो पता चलेगा कि हम कितने पानी में हैं। बस यह पैग़ाम भी पहुंचाने और फैलाने की ज़रूरत है कि अल्लाह की तरफ़ रुजूअ का एहतिमाम (व्यवस्था) की जाए।

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी साहब

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Issue: 11-12 | Nov-Dec 2022 | Volume: 14

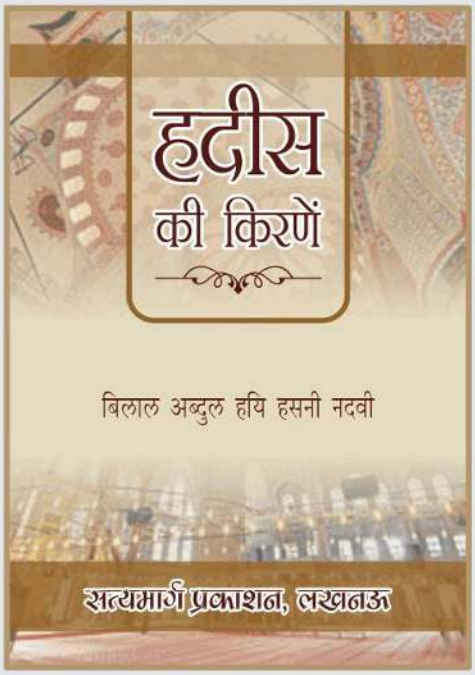

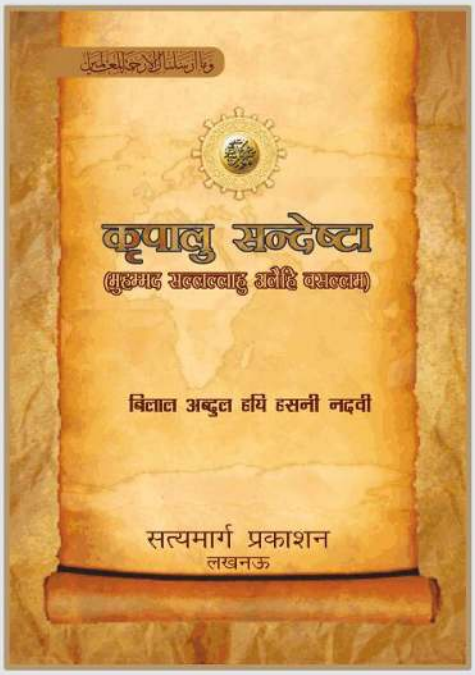

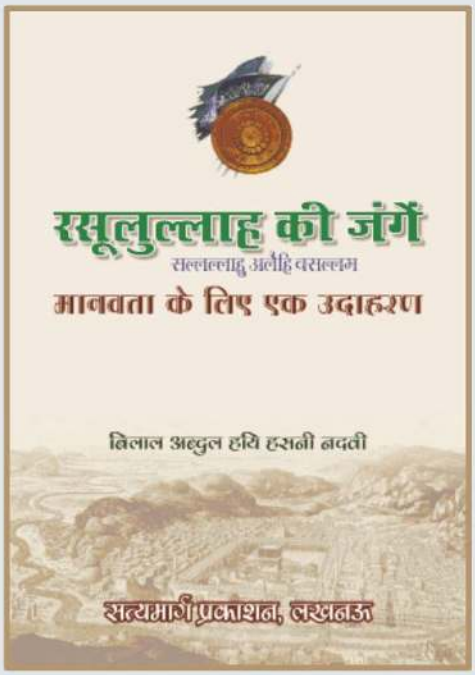

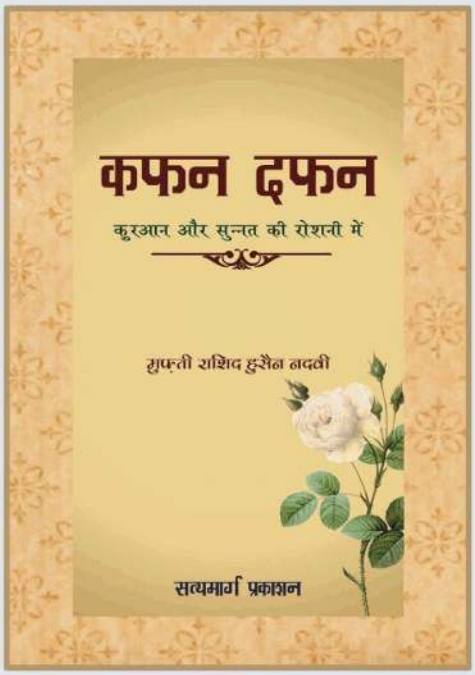

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.